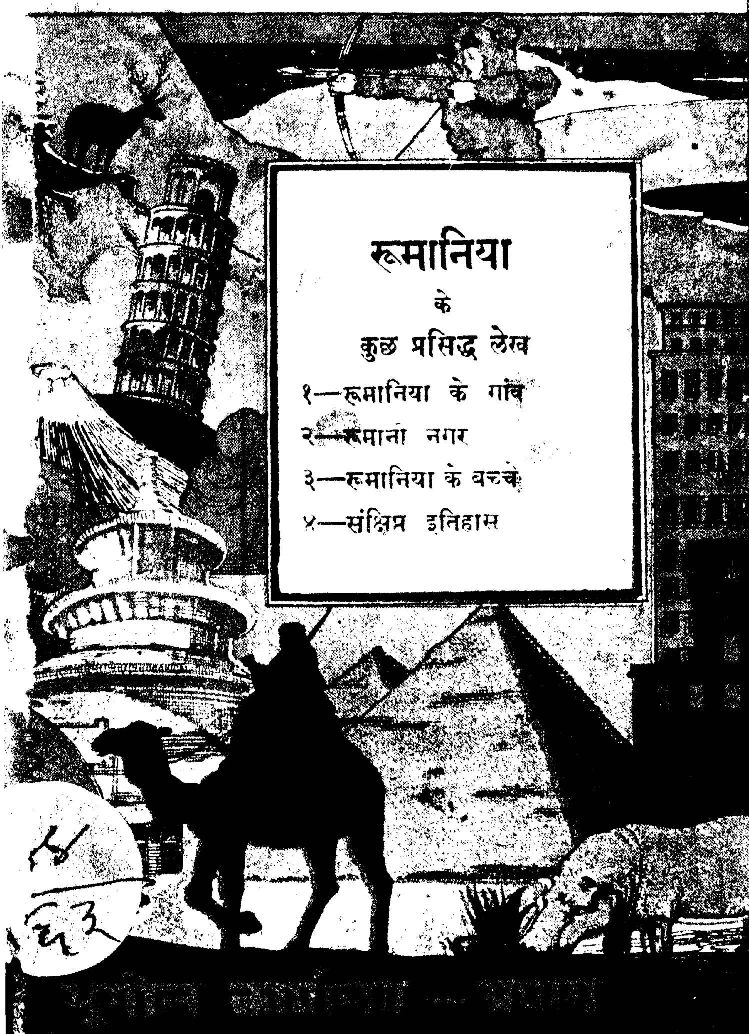
श्व दर्शन

रूमानिया



रूमानिया

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

१—रूमानिया के गांव
२—रूमानी नगर
३—रूमानिया के बच्चे
४—संक्षिप्त इतिहास

मई १९४०] **देश-दर्शन** [वैशाख १९९७

(पुस्तकाकार, सचित्र, पाक्षिक)

संख्या १२] रूमानिया [वर्ष १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
Single copy As. -/6-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
एक प्रति ।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति तथा भूरचना

रूमानिया के उत्तर पश्चिम की ओर हंगरी, उत्तर में चेकोस्लोवेकिया और पोलैंड, उत्तर पूर्व में रूस, दक्षिण की ओर बलगेरिया और दक्षिण पश्चिम में यूगोस्लैविया और दक्षिण पूर्व की ओर काला सागर है।

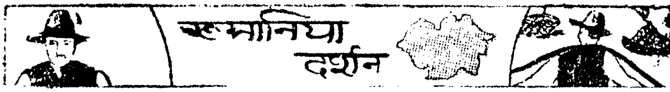
रूमानिया देश के मैदान गर्द वाले और काले हैं। उनमें विशाल पर्वत ऐसे हैं जिनका पार करना दुर्गम है। मैदानों में बड़ी बड़ी नदियाँ बहती हैं और सुन्दर उपजाऊ घास के बड़े बड़े मैदान हैं।

रूमामिया देश में अधिकांश वस्तुयें ऐसी हैं जो एक दूसरी की बिलकुल विपरीत हैं। यदि हम देश के मध्यवर्ती भाग से होकर अपनी यात्रा करें तो विपरीतता की मात्रा और भी अधिक बढ़ जाती है। वहाँ जलवायु में बड़ा अन्तर पाया जाता है। एक ही समय में वहाँ किसी भाग में तो बरफ पड़ती दिखाई पड़ती है और किसी में सर्दी अधिक नहीं रहती और सूर्य का प्रकाश रहता है। गर्मी के दिनों में वहाँ जिस स्थान पर कड़ाके की जलाने वाली धूप रहती है और १०८ तापक्रम

रहता है वहीं जाड़े के दिनों में कड़ाके की सरदी पड़ती है और तापक्रम शून्य दर्जे से २३ दर्जा नीचे हो जाता है।

रूमानिया योरुप के धनी तथा निर्धन दोनों देशों में गिना जा सकता हैं। वह अपनी सोने, तेल और लोहे की बड़ी खानों के कारण धनी गिना जाता है किन्तु इन खानों का प्रयोग अभी हाल ही में होने लगा है। पहले अधिकांश लोग बहुत गरीब थे। वहां पर दो ही प्रकार के लोग थे। एक तो राजे और अमीर लोग और दूसरे गरीब किसान। मध्यम श्रेणी के लोग वहां पर बिलकुल न थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि वहां पर मनुष्यों में भी बिपरीतता वर्तमान थी।

इन भिन्नताओं के कारण रूमानिया निवासियों के चालचलन तथा रहन सहन के ढंगों का समझना आसान हो जाता है। इनका प्रभाव उनके इतिहास पर भी बहुत गहरा पड़ा है। जलवायु के विपरीत होने के कारण वहाँ के निवासी परिश्रमी, मज़बूत और निडर हो गये हैं। किन्तु गरीबों तथा अमीरों के बीच जो भेद भाव हैं उसके कारण वहां की अवस्था बड़ी जटिल होती



जा रही है और उसको सुलझाना सरल काम नहीं है।

कार्पेथियन पर्वत रूमानिया के बीचों बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला हुआ है। डैन्यूब नदी वहाँ के मैदानों के बीच होकर बहती है वह और उसकी सहायक नदियाँ रूमानिया के विशाल मैदानों को सींचती हैं और उसे उपजाऊ बनाती हैं।

यदि हम रूमानिया के किसी भाग का भी भ्रमण करें तो हमको प्रत्येक भाग में दो प्रकार के निवासी मिलेंगे। एक तो वे लोग हैं जो अपने को प्राचीन रूमानियन कहते हैं और दूसरे लोग अपने को नये अथवा बड़े रूमानिया का निवासी बताते हैं। नकशे में ढूंढ़ने से रूमानिया के यह दो भाग नहीं मिलेंगे। १९१४ ई० के युद्ध के पहले रूमानिया एक छोटा सा देश था। १९१४ ई० के पहले उसमें मोलडाविया और वल्लाचिया दो प्रधान प्रान्त थे। किन्तु युद्ध के पश्चात् संधि हो जाने पर वर्तमान अथवा बड़ा रूमानिया बनाया गया है। नये रूमानिया देश में ट्रान्सीलवानिया और बनट का भाग (पहले हंगरी का) बुकोवीना (आस्ट्रिया का) बेसा-

विया (रूस का) और दोबरूद्जा (बलगेरिया का) आदि प्रान्त सम्मिलित हैं। जो नगर अथवा स्थान १६१४ के युद्ध के पहले रूमानिया राज्य में थे वहाँ के निवासी पुराने रूमानियन कहलाते हैं और १६१४ के पश्चात् मिले हुये प्रान्तों के निवासी अपने को नये रूमानिया के निवासी बतलाते हैं।

प्राकृतिक रूप से रूमानिया के पड़ोसी देश अपने प्रान्त रूमानिया को देना नहीं चाहते थे किन्तु विवश हो उन्हें देना पड़ा है इसलिये उन देशों का सम्बन्ध रूमानिया के साथ अच्छा नहीं है। रूमानिया के नये प्रान्तो के बहुत से निवासी ऐसे हैं जो रूमानिया जाति के नहीं हैं और वे वर्तमान नए विधान को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार नहीं कर रहे हैं। वे उसे घृणा की दृष्टि से देख रहे हैं। वे अपने जाति वालों के अधिकार में रहना चाहते हैं। किन्तु इस नये प्रान्तों के अधिकांश निवासी रूमानियन जाति के ही हैं। इसलिये जो लोग रूमानियन जाति के नहीं हैं वे अल्पसंख्यक लोगों के नाम से प्रसिद्ध हैं। उन्हें अपनी भाषा के प्रयोग करने तथा अपने रीत-रिवाज और धर्म के पालन करने की

स्वतंत्रता प्रदान की गई है। लीग आफ नेशन्स (अन्तर्राष्ट्रीय सभा) का यह कर्तव्य हैं कि वह अल्प संख्यक लोगों के अधिकार की रक्षा करे और जिस राज्य में ये हैं, निरँकुश शासन से सदा उन्हें बचाती रहे। अल्प संख्यक लोगों में सब से अधिक हंगरी निवासियों की है। इसके बाद तथा रूसियों की संख्या है। इन जातियों के सिवा और दूसरी जातियों के लोग भी रूमानिया में निवास करते हैं।

रूमानिया के कार्पेथियन पर्वत बड़े सुन्दर हैं। इनका दृश्य बड़ा सुन्दर है और उनमें जो जंगल तथा वनस्पति है वह बड़ी शोभायमान है। कार्पेथियन पर्वत के ढालों पर इतने घने जंगल हैं कि उनमें आज तक मनुष्य जाति के पैर नहीं पड़े हैं। निचले ढालों पर मुलायम सिवार घास जमी हुई है और उसके आगे वाले भागों में सुन्दर जड़ी बूटियों वाली भूमि है। इसी भाग में शहद की मक्खियाँ रहती हैं और रूमानिया का यही भाग शहद का देश कहलाता है। अधिक ऊँचे स्थानों को छोड़ कर (जहाँ वनस्पति नहीं उगती) सब कहीं सुन्दर सुगन्धित फूलों के पौधे उगे रहते हैं। स्वेत, लाल, नीले, पीले,

सभी रंगों के पौधे अपनी प्राकृतिक जंगली दशा में उगते हैं और उनकी छटा का वर्णन नहीं हो सकता है। घाटियों में नदियों के किनारे हरिसेस (इन्द्र धनुष) सुनहरे रंग के फूलों की धूम रहती है।

रूमानिया के पर्वतों तथा जंगलों में स्ट्राबेरी (बेर) तथा रास्प बेरी (बैर) के पौदे उगते हैं जिससे वहाँ के लड़के लड़कियों को बाज़ार में नहीं खरीदने जाना पड़ता कार्पेथियन पर्वत पर रीछ बहुत पाये जाते हैं। रीछ बैर को बहुत पसंद करता है। जब लड़के लड़कियों का समूह बैर तोड़ने के लिये जंगल में जाता है तो ये रीछ उन्हें जबरदस्ती घुस आने वाले व्यक्ति की भांति देखते हैं। कभी कभी तो ऐसा होता है कि जहाँ पर रीछ बैर खाते रहते हैं उसी के समीप ही लड़के लड़कियाँ भी बैर तोड़ते रहते हैं। रीछ को या तो मनुष्य जाति के वहाँ मौजूद होने का पता ही नहीं रहता या वे जान बूझ कर परवाह ही नहीं करते।

रीछ के सिवा कार्पेथियन पर्वतों पर भेड़िया, लाल लोमड़ी, हिरन, बारासिंगा और जंगली सुअर भी होता है। जाड़े के दिनों में भेड़िये बड़ी हानि किया करते हैं।

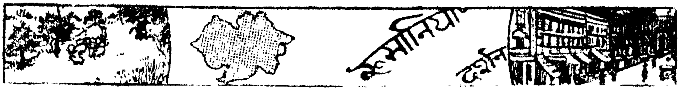
कार्पेथियन पर्वतों पर बाज़, चील, उकाब और दूसरे प्रकार की पक्षियाँ बहुत बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। तितलियों के समूह का तो वहां भंडार है। रंग बिरँगी तितलियां समूह की समूह इधर उधर उड़ती रहती हैं।

कार्पेथियन पर्वतों में ही रूमानिया का धन गाड़ा हुआ है। कार्पेथियन प्रदेश में ही पेट्रोल के कुएँ पाये जाते हैं। कोयला, लोहा, तांबा, चांदी, सोना और जस्ते आदि की खानें वहीं वर्तमान हैं रूमानिया के अन्दर योरुप में सब देशों से अधिक सोना निकाला जाता है।

कार्पेथियन पर्वत का महत्व रूमानिया के इतिहास में बहुत ऊँचा है। उसके सम्बन्ध में बहुत सी कहावतें तथा कहानियां हैं। कार्पेथियन पर्वत के बारे में यह कहानी प्रसिद्ध है कि जब ईश्वर ने संसार को बनाना आरम्भ किया तो उसने ताने (डोरे) और कपड़े के दो गोले बनाये। आकाश के आकार का निर्माण कर लेने के पश्चात् ईश्वर ने ताने के गोले को साही के हाथों में दे दिया और उससे पकड़े रहने को कहा। साही ने गोले को छोड़ दिया इसलिए पृथ्वी इतनी बड़ी हो गई

कि आकाश के नीचे उसका समाना कठिन हो गया। जब कि ईश्वर इसी सोच विचार में पड़े थे शहद की मक्खी साही के मांद पर उड़ती हुई गई और उसने साही को कहते हुआ सुना कि यदि मैं सृष्टि कर्ता होती तो भूमि को दोनों हाथों से पकड़ कर दबा देती और उससे घाटियाँ और पर्वत बन जाते और पृथ्वी छोटी हो जाती। यह सुनते ही शहद की मक्खी उड़ती हुई ईश्वर के पास पहुँची और सारा वृतान्त कह सुनाया ईश्वर ने साही के कथनानुसार किया और उससे वर्तमान दुनिया का आकार बना और उसमें समतल बराबर मैदानों के स्थान पर पर्वत पहाड़ियाँ और घाटियाँ बन गईं।

कार्पेथियन पर्वत रूमानिया की रीढ़ की हड्डी की भांति और डैन्यूब नदी धमनी नाड़ी (जिससे सारे शरीर में रक्त पहुँचता है) की भांति है। डैन्यूब नदी द्वारा ही रुमानिया काला सागर, बाल्टिक सागर और उत्तरी सागर से मिला हुआ है। डैन्यूब नदी प्रदेशों में होकर बहती है इसी कारण एक अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन का कथन है कि सभी राष्ट्रों को डैन्यूब नदी के प्रयोग का



अधिकार होना चाहिए। रूमानिया को डैन्यूब नदी से और दूसरे राष्ट्रों से अधिक लाभ है।

यह डैन्यूब नदी और उसकी सहायक नदियों का ही प्रताप है जो रूमानिया इतना धनी कृषक देश बना हुआ है। रूमानिया की उपज डैन्यूब नदी द्वारा ही दूसरे देशों को भेजी जाती है। जाड़े के दिनों में डैन्यूब नदी पर के बहुत से बन्दरगाह बन्द हो जाते हैं क्योंकि उनपर बरफ पड़ा करती है। इसलिये उस समय रूमानिया का परियात कान्स्टाँजा बन्दरगाह द्वारा काला सागर से होता है। इस प्रकार काला सागर भी रूमानिया के लिये बड़ा आवश्यक है।

देश दर्शन

रूमानिया के गांव

रूमानिया के गांव यदि पहाड़ियों से छिपे नहीं होते तो वे दूर ही से भली भांति दिखाई पड़ते हैं। वहाँ के गांवों के अधिकांश घर या तो स्वेत या चमकदार नीले रंग के होते हैं।

गावों के अन्दर रहने के लिये घर बनाये जाते हैं इसके सिवा लोग खेतों में भी फार्म हाउस (खेतों के घर) बनाते हैं। फार्म हाउसेज गांव के चारों ओर बनाये जाते हैं। उनके चारों ओर बाड़ा बना दिया जाता है। बाड़े के एक ओर एक द्वार निकलने के लिये बनाया जाता है। रूमानिया में ग्रीष्म काल अधिक लम्बा होता है इसलिये वहां के किसान अपना अधिकांश समय घर के बाहर ही व्यतीत करते हैं। बाड़े के लीचगेट पर एक लकड़ी बेंच रखी रहती है जिसपर दिन का काम समाप्त करने के पश्चात् कुटुम्ब के सभी प्राणी बैठा करते हैं। ये बेंच बहुधा चमकदार रंगो से रंगी रहती है।

रूमानिया के निवासी बड़े अतिथि सत्कार होते हैं।



जब कोई उनके द्वार पर जाता है तो वह बड़े हर्ष के साथ उसका स्वागत करते हैं। रूमानिया में सारे कुटुम्ब के लोग काम करते हैं। वे सब मिल कर स्वयम् अपना घर अपने हाथों से तयार करते हैं। घर के अन्दर जो कुछ सामान होता है वह भी उन्हीं के हाथों का बना होता है। जब कोई किसान अपना घर बनाना चाहता है तो वह अपने घर के प्राणियों, नातेदारों और मित्रों को अपनी सहायता के लिये बुला लेता है। वह शायद बढ़ई और मकान बनाने वाले कारीगर को मुश्किल तथा कठिन कार्य को करने के लिये रखते हैं। शेष सारा काम अपने हाथों से ही करते हैं। किसान लोग अपने हाथों से अपनी ईंटें मिट्टी और भूसा मिलाकर बनाते हैं। मिट्टी की ईंटों पर सफेद पुताई कर दी जाती है जिससे वे सुन्दर तथा भली प्रतीत होती हैं। मकान की छतें बहुधा खपड़ैल की होती है। कहीं कहीं छप्पर का प्रयोग भी किया जाता है।

किसानों के अधिकांश झोपड़ों में बहुधा दो ही कमरे होते हैं। जिस कमरे में होकर प्रवेश करते हैं उसमें एक भट्टी होती है जिसमें भोजन बनाया जाता है

और दूसरे घरेलू काम होते हैं। भट्टी ईंट की बनी होती है और उसकी सूरत चौकोर कापर की भाँति होती है। भट्टी के बग़ल में दीवाल से लगा हुआ ईंटों का एक चबूतरा बना रहता है जिसमें मेहमानों की खातिरदारी की जाती है। रहने वाले कमरे में भी कभी कभी एक भट्टी बना लेते हैं। इस कमरे में एक कोने पर सोने के लिये चार पैर वाला एक ऊँचा स्थान बनाया जाता है, जिसके चारों ओर पर्दे लगे रहते हैं और ऊपर छत बनी रहती है। चारपाई की छत के ऊपर बहुत से तकिये रखे रहते हैं, जिनके गिलाफ चमकीले रंग बिरंगे होते हैं। जाड़े के दिनों में लोग भट्टी के पीछे सोया करते हैं और गरमी के दिनों में घर के मर्द लोग घर से बाहर सोया करते हैं।

रहने वाले कमरे की दीवारों पर हाथ के बुने हुए कुछ कम्बल और कुछ मिट्टी के बर्तन टँगे रहते हैं। कमरे के कोणों अथवा पूर्व की ओर कोई न कोई पवित्र तसवीर टँगी रहती है। तसवीर के ऊपर एक दिया रखा रहता है जिसमें ज़ैतून का तेल जलाया जाता है। घर की फर्श सुखाये हुए कीचल की बनाई जाती है

जिसके ऊपर लकड़ी का बुरादा अथवा बालू पड़ा रहता है।

प्रत्येक घर में एक शादी का सन्दूक और एक लकड़ी का सन्दूक होता है। ये सन्दूक सुन्दर रंगों से रँगे रहते हैं। शादी के समय प्रत्येक स्त्री इन सन्दूकों को लेकर अपने नये घर में जाती है।

ब्याह वाला सन्दूक कपड़ों से भरा रहता है। यह कपड़े अधिकांश संख्या में हाथ के कते हुए सूत के बने होते हैं और इनमें रूमानिया के हाथ के बने हुए बेल-बूटे लगे रहते हैं। इस सन्दूक में और दूसरी कुटुम्ब की मूल्यवान वस्तुएँ भी रख दी जाती हैं। रहने वाले कमरे में एक मेज़, एक या दो कुर्सियाँ और कुछ स्टूल रहते हैं। यह सभी घर के ही बने होते हैं और चमकीले रंगों से रँगे रहते हैं।

रूमानिया के प्रत्येक गाँव में एक चर्च तथा एक स्कूल होता है। जिन गाँवों में अल्पसंख्या (हंगेरियन आदि) के लोग रहते हैं उसमें एक से अधिक चर्च अथवा स्कूल होते हैं। गावों में कुँए होते हैं। कुँओं पर कई फुट लम्बे खम्भे गड़े रहते हैं जो दूर तक दिखाई

पड़ते हैं। गांव के अन्दर एक दूकान भी होती है जहाँ से लोग सामान खरीदते हैं। लोग अधिकतर अपनी पैदा की हुई तथा बनाई हुई वस्तुओं का प्रयोग करते है। इस कारण उन्हें दूकान से बहुत कम सामान खरीदने की आवश्यकता पड़ती है। गाँव में काफे स्थान पर गाँव के सभी लोग संध्या समय एकत्रित होते हैं।

रूमानिया के किसान अब भी अपनी प्राचीन भेष धारण करते हैं। प्रत्येक प्रान्त के भेष में कुछ न कुछ अन्तर अवश्य होता है। गड़रियों की पहचान बड़ी सरलता से हो जाती हैं क्योंकि वह भेड़ के चमड़े का बना हुआ चुगा पहनते हैं और भेड़ के बच्चे के चमड़े की जँची टोपी लगाते हैं। वे चमड़े की कमीज पहिनते हैं जिसमें सुन्दर बेल बूटे लगे रहते हैं। कमीज के ऊपर कमर पर पेटी से कसे रहते हैं कमीज के नीचे ऊनी बनियाइन पहनी जाती है।।

रूमानिया के किसानों की स्त्रियाँ अंचलों का प्रयोग करती है। अंचलों के ऊपर वे लुंगियाँ पहनती हैं जिसको फोटा कहते हैं। वे पेटी भी लगाती हैं। जो बेल बूटों से सुसज्जित रहती है। अँचरे से नीचे वे बनयाइन का

प्रयोग करती है, जिसमें बेल-बूटे लगे होते हैं। रूमानियन विवाहित अथवा कुँवारी स्त्रियों की पहिचान उनके सिर के पहनावे मे भलीभांति सरलतः पूर्वक की जा सकती है। विवाहिता स्त्री बड़े लम्बे सफ़ेद घूंघट पहने रहती हैं। यह घूंघट पारदर्शी होते हैं जिससे वे भली भाँति देख सकती हैं। अविवाहिता स्त्रियाँ अपने सिरों पर एक प्रकार के रंगीन रुमालों का प्रयोग करती हैं। विवाहिता तथा अविवाहिता दोनों प्रकार की स्त्रियाँ एक प्रकार के हार (हेवाल) का प्रयोग करती हैं जो बहुधा चाँदी के सिक्कों का बना होता है।

रूमानिया के स्त्रियों का अधिकांश समय भोजन बनाने में नष्ट होता है। वहां के किसान बहुत कम रोटी खाते हैं। रोटी को वे बड़े सुख की वस्तु समझते हैं। उनका मुख्य भोजन मकई की रोटी तथा भेड़ का मक्खन होता है। मकई की रोटी को वे लोग मामालिगाटा कहते हैं। यह रोटी ताज़ी बनाकर खाई जाती है। बहुधा रोटी को कई टुकड़ों में काट कर आग पर सेंका जाता है मक्खन तथा अंडे को आग पर पका कर रुमानियन लोग खाते है और उसे वह बहुत पसंद करते

हैं। वे मलाई और तरकारी के सत का प्रयोग भी करते हैं। रुमानियन लोग मांस का प्रयोग बहुत कम करते हैं। नदियों के किनारे के रहने वाले मछली तथा स्थानीय चिड़ियों को अधिक प्रयोग में लाते हैं। गरमी के दिनों में वहाँ के लोग सकुटुम्ब खेतों में भोजन करते हैं जहाँ पर वे काम करते रहते हैं। वे घर से रोटियां और दूसरे सूखे भोजन साफ कपड़ों में बाँध कर और सूप आदि मिट्टी के बर्तनों में लेकर जाते हैं। वह लोग यदि घर में भोजन करते हैं तो भोजन एक तीन पैर वाली नीची गोल मेज़ पर परोसा जाता है, जिसके चारों ओर छोटे स्टूलों पर भोजन करने वाले बैठते हैं। यदि स्टूल न हुआ तो उसके स्थान पर और किसी दूसरी का प्रयोग करते हैं। यदि घर में अधिक बच्चे होते हैं तो वे अपने लिये लकड़ी के टुकड़े बाहर से ले आते हैं। केवल निमंत्रण के समय ही मेज़ पर कपड़ा बिछाया जाता है भोजन करने के पश्चात् मेज़ धो दी जाती है। जब गरम मकई की रोटी मेज़ पर रखदी जाती है और सभी भोजन करने वाले बैठ जाते हैं तो रोटी एक डोरे द्वारा टुकड़े टुकड़े कर दी जाती है। थालियों का प्रयोग

नहीं किया जाता। सभी भोजन करने वाले लकड़ी के चम्मच द्वारा बर्तन से एक तश्तरी में शोरवा निकाल निकाल कर खाते हैं। समीप ही पानी का भरा हुआ एक बर्तन रख लिया जाता है जब कोई प्यासा होता है तो वह एक छोटे बर्तन द्वारा बड़े बर्तन से पानी लेकर पानी पी लेता है।

शनिवार का दिन रूमानिया में सफाई करने के लिये होता है। दोपहर को गृहणी घर के लोगों के कपड़ों की सफाई करती है। संध्या समय बच्चे नहलाए जाते हैं और दूसरे बड़े लोग भी स्नान करते हैं। रविवार को सभी लोग चर्च जाते हैं और संध्या समय गांव में एक स्थान पर सभी एकत्रित होते हैं जहाँ पर नाच गाना होता है। यदि किसी घर के बच्चों तथा लोगों के कपड़े साफ नहीं रहते तो उस घर की गृहणी पर ताने और उपहासों की बौछार पड़ोसी लोग करते हैं। उपहास करने के लिये वहां पर बहुत से गाने बने हैं जिनको लोगों को सुना सुना कर गाते हैं। उन उपहासों में से एक का अनुवाद नीचे दिया जाता है :—

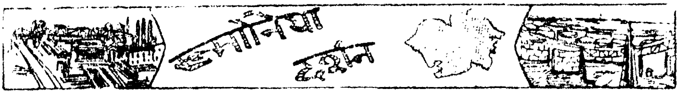
"मेरी प्रेमिका ने अपने कपड़े इस प्रकार साफ किये हैं और उन्हें इतना साफ तथा सुन्दर बना दिया

है कि जब से उसने उन्हें साफ करके सूखने के लिये झाड़ियों पर डाल दिया है तब से गाँव के कुत्ते उन्हें देख कर बराबर भौंक रहे हैं"।

किन्तु रूमानियन गृहिणी को दोष देना अपराध है। क्योंकि वह बहुत काम करती है। उसे भोजन बनाना पड़ता है अपने पति की सेवा करनी पड़ती है और साथ ही साथ उसे पालतू जानवरों, बतखों और मुर्गियों की भी देख भाल करनी पड़ती है। उसे अपने पति की सहायता के लिये खेत में भी काम करना पड़ता है।

खेतों में सन उगाया जाता है। उसे गृहणी कातती है और उससे कपड़े दैनिक प्रयोग के लिये बनाये जाते हैं। बाज़ार से जो कपास आती है उसे कात कर वह सूत तयार करती है और उससे कपड़ा बुना जाता है।

बसंत काल में उसे जाड़े की ऋतु के लिये कपड़ा बनाना पड़ता है। बसंत ऋतु में भेड़ों के बाल काट लिये जाते हैं और ऊन गृहणी को दे दिया जाता है। वह उसे साफ करती है और फिर उसे कातती है। उसके बाद वह उसकते हुये ऊन से कम्बल तथा और दूसरे कपड़े कुटुम्ब के प्रयोग के लिये तयार करती है। ऊन



को वह साफ करके भिन्न भिन्न रंगों में रंगती है और फिर उससे कालीन तथा दरियां बनाती है जो बाजारों में ले जाकर बेचे जाते हैं।

रूमानिया के कुछ भागों में गृहिणी रेशम भी तयार करती है। वह रेशम के कीड़ों को बाजार से खरीदती है। उन्हें शहतूत की पत्तियाँ खिलाकर पालती है और उनसे रेशम तयार करती है। इस प्रकार जो रेशम तयार होता है उससे विवाहिता स्त्रियों के परदे (घूँघट) के कपड़े बनाये जाते हैं।

रूमानिया के किसान परिश्रम तो अवश्य बहुत करते हैं किन्तु वह आनन्द भी काफी करते हैं। वह लोग खेल कूद, गाने बजाने आदि में आनन्द उठाते हैं। वे नाचने के बड़े शौकीन होते हैं। रूमानिया का राष्ट्रीय नाम 'होरा' के नाम से प्रसिद्ध है। यह नाच बहुत प्राचीन है और यह कदाचित् वही नाच है जिसे डेसियन लोग प्राचीन काल में नाचा करते थे।

इस नाच में नाचने वाले (औरत-मर्द) एक घेरे में एक दूसरे का हाथ पकड़ कर खड़े हो जाते हैं। वे गाने के स्वर के अनुसार अपने हाथ पांव आगे पीछे

ऊपर नीचे, दाएँ और बायें चलाते हैं। जब नाच होता रहता है जेप्सी (कंजर लोग गाना गाते रहते हैं। प्रत्येक समूह में कम से कम दो जिप्सी रहते हैं। उनमें से एक सरंगी बजाता है। रूमानी लोग हवा से बजने वाले बाजों को बहुत पसंद करते हैं इसी कारण वह कई प्रकार की सीटी तथा बाँसुरी बजाते हैं। यदि रूमानी लड़के के पास सीटी नहीं होती तो वह हरी पत्तियों को होंठ पर रख कर सुन्दर स्वर निकालता है। गड़रियों के बच्चे पर्वतों पर इसी प्रकार पत्तियों से बाजे बजाकर नाचते हैं।

जाड़े के दिनों में किसान एक स्थान पर किसी के घर में इकट्ठा होते हैं। वे लोग ऐसे मिलन को सैज़ाटोर कहते हैं। कभी कभी ऐसा मिलन स्त्रियों का ही होता है और कभी कभी स्त्रियाँ और मर्द दोनों इसमें होते हैं। वे लोग आपस में बैठ कर सन, सूत और ऊन कातते हैं। संध्या समय सब को जलपान दिया जाता है। जलपान में भूना हुआ आलू और लौकी अथवा कद्दू दिया जाता है। उसके बाद सभी काम से फुर्सत ले लेते हैं और खेल में लग जाते हैं। ऐसे समय पहेली आदि

कहानियाँ होती हैं। मज़ाकी लोगों का ऐसे समय बड़ा सम्मान होता है।

ऐसे समय पहले जब लोग अनपढ़ थे तो क़िस्से कहानियाँ बहुत कही जाती थीं, किन्तु अब लगभग सभी युवक तथा युवतियाँ पढ़ लिख गये हैं इसलिये वहाँ पर ज़ोरों से पढ़ने का काम करते हैं। लोग देहाती गाने भी गाते हैं।

नव वर्षोत्सव के समय अँग्रेज़ों की भाँति रूमानी लोग भी एक दूसरे से मिलते हैं। आधी रात के समय एक अद्‌भुत संस्कार होता है। जब आधी रात का समय होता है तो एक नई लकड़ी की बाल्टी एक बड़े कमरे में मेज़ पर लाकर रक्खी जाती है। सभी लोग बाल्टी के अन्दर कुछ न कुछ डालते हैं। लड़कियाँ माला अथवा अँगूठी डालती हैं और मर्द पाइप अथवा चाक़ू डालते हैं। उसके बाद एक लड़का और एक मर्द कमरे में प्रवेश करते हैं। लड़का सफेद पोशाक में रहता है क्योंकि वही नये वर्ष का चिन्ह स्वरूप होता है। आदमी किसी नई टहनी से बाल्टी बजाता और नये वर्ष की खुशी में गाना गाता है। तब वह बालक बाल्टी में से एक एक करके सभी सामान निकालता है और

अपनी भविष्य वाणी उनके सम्बन्ध में कहता है। जितना ही अधिक मज़ाक वाली बात की वह भविष्य वाणी करता है उतना ही अधिक समूह अधिक प्रसन्न होता है। इसके पश्चात् कोई व्यक्ति गाना आरम्भ करता है और इस प्रकार नाच आरम्भ हो जाता है।

बड़े दिन और ईस्टर के त्योहार भी रूमानिया में अपने ढंग पर मनाये जाते हैं। रुमानी स्त्रियां ईस्टर में बड़े अच्छे अंडे तैयार करती हैं। वे अंडों को खट्टे दूध में धोती हैं और उन्हें आग में गरम करती हैं। वे एक लकड़ी की पसिल (जिसके एक सिरे पर एक धातु का ट्यूब लगा रहता है) लेकर पिघलती हुई मोम में डुबोती हैं और फिर उसी से अंडे पर सुन्दर चित्र बनाती हैं। उसके बाद अंडा रंग में, फिर खौलते पानी में डुबोया जाता है जिससे मोम छूट जाय। उसके बाद फिर जिस रंग की आवश्कता होती है उसमें डुबाया जाता है।

बड़े दिन के अवसर पर गाँव के लड़के प्राचीन ढंग के कपड़े पहिन कर गाँव के सभी घरों का चक्कर लगाते हैं और मेजाई (तत्वज्ञानी पंडित) की नकल करते हैं। एक मनुष्य लकड़ी का बना हुआ पर्दा (जिसमें दो सींगें

रहती हैं) सिर पर पहिनता है और गाँव वालों को प्रसन्न करने के लिये नाचता है ऐसे मनुष्य को तुर्का कहते हैं।

रूमानी किसान का जीवन बड़ा कठिन होता है किन्तु ऐसा जीवन बड़ा सुखमय तथा स्वास्थ्यप्रद होता है। उनके जीवन में बहुत से सुखमय अवसर आते हैं जो सचमुच ही सुखमय तथा सुन्दर होते हैं। इस प्रकार उसका जीवन नगर के रहने वालों से अच्छा होता है यद्यपि उसे पढ़ने लिखने की वह सुविधायें नहीं हैं जो कि नगर के रहने वाले के लिये हैं।

रूमानी नगर

नगर राष्ट्र के जीवन में एक बहुत बड़े सहायक होते हैं क्योंकि नगरों में ही विश्वविद्यालय, कालेज और विद्या सम्बन्धी दूसरी सुविधायें होती हैं। रूमानिया एक कृषक देश है तो भी उसके नगर विद्या के केन्द्र हैं जहां पर वहां के लोग विद्या का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। गत महायुद्ध में रूमानिया को इतनी अधिक हानि उठानी पड़ी है कि वहां पर प्राचीन नगर तो रही नहीं गये या बहुत कम प्राचीन नगर रह गये हैं।

बुखारेस्ट रुमानिया की राजधानी है। रूमानिया संयुक्त राष्ट्र बनने के पहिले बुखारेस्ट बल्लाचिया की राजधानी थी। बुखारेस्ट को कभी २ छोटा पेरिस कहा जाता है क्योंकि वहां के सुन्दर पार्क तथा दूकानें पेरिस से मिलती जुलती हैं।

बुखारेस्ट नगर में प्रवेश करने पर शीघ्र ही पता चल जाता है कि नगर में बहुत सी बातें फ्रांस से उधार ली हैं। मिसाल के तौर पर यदि वहां की किताबों की दूकानों पर जाकर निरीक्षण किया जाय तो रूमानी

पुस्तकों तथा पत्रिकाओं के सिवा फ्रांसीसी किताबें भी मिलेंगी। सभी पढ़े लिखे लोग अधिकांश रोजगारी



रूमानिया की राजधानी बुखारेस्ट नगर की प्रधान सड़क का एक दृश्य

तथा दुकानदार फ्रान्सीसी भाषा बोलते हैं। बहुत से

लोग अपने बच्चों को फ्रांस विद्या ग्रहण करने के लिये भेजते हैं यद्यिपि उनके यहां के स्कूल कालेज काफी उन्नति कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि वहां के अधिकांश उच्च श्रेणी वालों ने फ्रान्स में ही शिक्षा प्राप्त की है और वे फ्रान्सीसी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। रूमानिया में फ्रान्सीसी भाषा का प्रयोग उसी प्रकार होता है जिस प्रकार कि रूमानी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

बुखारेस्ट नगर की गलियों में सारे रूमानिया के ही नहीं वरन् पड़ोस के देशों के लोगों की भीड़ भी रहती है। वहां पर रूसी; जर्मनी, हंगेरियन तथा फ्रान्सीसी सभी भाषाओं का प्रयोग होता है और सभी देशों के लोग दिखाई पड़ते हैं। रूमानी भाषा का प्रयोग देहात में अधिक होता है। नगरों में रूमानी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

यद्यपि रूमानिया एक बड़ा देश है तो भी वहां पर कोई बोली नहीं है जिसका प्रयोग वहां के सभी निवासी कर सकें। यद्यपि उनकी बोली बोलने का ढंग सब का मिलता जुलता है केवल स्वरों में कुछ अन्तर पड़ता है।

कोई खास बोली न होने का मुख्य कारण यह है कि प्राचीन काल से लेकर अभी बर्तमान समय तक रूमा-



मूलडेविया पठार के ग्वाले अपने साधारण वेष में

निया में केवल गल्ले बानी का काम होता था। गरमी

के दिनों में चरवाहे पर्वतों पर अपने गल्ले लेकर कुछ समय के लिए मिलते जुलते थे अन्यथा वे एक दूसरे से सैकड़ों मील की दूरी पर रहा करते थे।

नगरों के निवासी अधिकांश मात्रा में नये फैशन के कपड़े पहिनते हैं जैसे कि लन्दन अथवा पेरिस में पहिने जाते हैं। कहीं कहीं किसान अपनी राष्ट्रीय भेष में दिखाई पड़ेगें। मेवा बेचने वालों का पहिनाव बड़ा अजीब होता है। वे बड़े लम्बे चौड़े बोरों की भांति सफेद पायजामा, कमीज और बेल बूटे तथा गोटेदार वेस्ट कोट पहिनते हैं। वे फलों की टोकरियां अपनी बगलों में कंधों के सहारे लटकाये रहते हैं। वह अपने इस पहनाव में बड़े ही भले मालूम होते हैं। एक घोड़े की गाड़ी वाले गाड़ीवानों की भी एसी ही अजीब पहनाव होता है। वे मखमली मुलायम कपड़ों का चुगा एड़ी (ankle) तक पहिनते हैं और कमर में ऊपर से एक पेटी बांधे रहते हैं। उनका भेष बड़ा अनोखा मालूम होता है यद्यिपि गरमी के दिनों में उन्हें ऐसे भेष से तकलीफ पहुँचती है।

बुखारेस्ट एक वर्तमान नगर है। यह नगर १००

साल के अन्दर बहुत ज्यादा बदल गया है। १०० साल पहिले नगर की गलियों में तख्ते लगे हुये थे और उनमें बहुत से सूराख रहते थे इसलिये बहुधा घोड़े गाड़ियों दुर्घटनाएं हो जाती थीं। उच्च श्रेणी वाले अपनी गाड़ियों पर अपनी स्त्रियों के साथ प्राचीन ढंग के कपड़े पहिन कर चला करते थे। उनके नौकर खाना बदोश गुलाम लोग हुआ करते थे जो मालिक के मकानों के समीप ही बड़े गंदे तथा खराब स्थान पर रहा करते थे। उनके रहने का स्थान के चारों ओर कूड़े कर्कटों के ढेर लगे रहते थे जिससे वहां की हवा बहुत खराब हो जाती थी और बहुधा बीमारी पैदा हो जाती थी।

यद्यपि बुखारेस्ट एक नया नगर है तो भी वहां बहुत से चर्च हैं जो सत्रहवीं सदी के बने हुये हैं। यह पुराने चर्च कान्स्टेन्टिन ब्रान्कोवत के बनाये हुये हैं। इनमें से एक सेंट जार्ज का चर्च है जहां पर सेंट जार्ज की कबर हैं जो सन् १६१४ ई० में २०० साल के पश्चात् मालूम हुई है। बुखारेस्ट का कैथीड्रल चर्च कान्स्टैन्टिन शेरबन का बनाया हुआ है। रूमानिया के राजे कुर्तिया डे आर्गेश में गाड़े हुये हैं जिसको न्यागो

बेस्सारब (Neago Bessarab) ने बनवाया था। आर्जेश नगर पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में बलाचिया की राजधानी थी। उसके बाद बुखारेस्ट राजधानी बनाई गई है।

बुखारेस्ट नगर में यूनिवर्सिटी है। इसलिये देश के भिन्न भिन्न भागों से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते हैं। इसके सिवा रूमानिया में तीन और दूसरी यूनिवर्सिटियाँ हैं। एक क्लूज (ट्रान्सीलवानिया की राजधानी) में, दूसरी जैस्सी (मोल्डेविया) में और तीसरी सेरनावटी या सेरनोविट्ज़ (बुकोवीना) में है।

क्लूज नगर आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज आदि यूनिवर्सिटी नगरों से बहुत भिन्न है। वहाँ पर नये ढंग के लेक्चर रूम तथा और दूसरे कमरे बने हैं। एक अलग मकान में एक बड़ी लाइब्रेरी (पुस्तकालय) है। लाइब्रेरी में केवल रूमानी भाषा की ही नहीं वरन् फ्रान्सीसी अंग्रेजी तथा और दूसरी भाषाओं की बड़ी तथा अच्छी पुस्तकें हैं।

क्लूज नगर की गलियां तथा सड़कें चौड़ी हैं और सुन्दर नये ढंग की दूकानें बनी हुई हैं। नगर के चारों

ओर का बाहरी भाग बड़ा सुन्दर है क्योंकि वहां कार्पेथियन पर्वत के ढाल हैं। नगर अधिकांश निवासी हंगेरियन हैं।

ट्रान्सीलवानिया में अधिक प्राचीन तथा अधिक चमकीला भड़कीला नगर ब्रासोव है। इस नगर के भी अधिकांश निवासी हंगेरियन हैं सैक्सन लोग भी काफी मात्रा में हैं। वहां पर एक प्राचीन लूथर धर्म वालों का गिरजाघर है जो बहुमूल्य ईरानी कालीनों से सजाया हुआ है। यह चर्च बाहर भीतर चारों ओर ईरानी कालीनों तथा शालों से सजा हुआ है। योरुप में केवल यही एक चर्च है जो इस प्रकार सजाया हुआ है।

अल्बा जूलिया नगर रूमानिया का प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। इस नगर के बारे में प्रत्येक रूमानियन लड़के को कुछ न कुछ अवश्य बतलाया जाता है। वहां पर एक प्राचीन किला तथा चर्च है। यहीं के किले में मिचेल नामक सूरमा ने युद्ध किया था और उसके युद्ध के बाद ही वल्लाचिया तथा मोल्डाविया पहले पहल मिलाये गये थे। इसलिये जब तक महायुद्ध का अन्त हुआ और ट्रान्सलवानिया और वेस्साविया आदि प्रान्त

रूमानिया में मिलाये गये तो यह तै किया गया कि रूमानिया के राजाओं की राजगद्दी राजधानी में न होकर अल्बा जूलिया के चर्च में हुआ करेगी।

बुखारेस्ट के बाद रूमानिया का सबसे बड़ा नगर किशेनेफ (Kisheneff) है। यह नगर बेस्सारबिया की राजधानी है। यह नगर सामान तयार करने के लिये प्रसिद्ध है। नगर में सभी प्रकार के कारखाने हैं। सबसे बड़ा कारखाना आटा पीसने की चक्कियों का है। जहां पर सारे प्रान्त से गेहूँ इकट्ठा होकर आता है। चीनी बनाने के कारखाने तथा लकड़ी चीरने के लिये भी कारखाने हैं। तम्बाकू, साबुन, मेज, कुरसी लकड़ी का सामान और दूसरी चीजों के बनाने के लिये भी बड़े बड़े कारखाने हैं।

केशेनेफ नगर के अधिकांश निवासी रूसी हैं और रूसी भाषा का प्रयोग करते हैं। वहाँ पर यहूदियों की संख्या भी काफी है जो वहां के मुख्य व्यवसायी हैं।

केशनेफ नगर को रूस ने १८७२ ई० में अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया था। यह नगर गत महायुद्ध के अन्त में क्रांति का केन्द्र बना हुआ था। पहले तो

वेन्सागविया प्रान्त ने यह तै किया था कि वह रूस से अलग होकर एक स्वतंत्र पंचायती राज्य रहेगा। आखिर-कार वहाँ के निवासियों ने रूमानिया में सम्मिलित होने का वोट दिया। रूसी निवासी अपने को रूस से अलग नहीं करना चाहते थे और रूस की सरकार भी अपना प्रान्त कभी देने पर राजी नहीं हुई इसी कारण आजतक रूमानिया तथा रूस के बीच इसके बारे में कोई संधि नहीं हुई है।

कान्स्टाँजा नगर काला सागर पर रूमानिया का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यह बन्दरगाह रूमानिया के लिये बड़ा उपयोगी है। इसी बन्दरगाह से रूमानिया का मिटी का तेल, पिट्रोल आदि बाहर भेजा जाता है। कार्पेथियन प्रान्त से इस बन्दरगाह तक मिट्टी का तेल नलों द्वारा आता है। लगभग सौ मील लम्बा एक बड़ा नल इसके लिये लगाया गया है।

और दूसरे देशों की भांति रूमानिया के नागरिकों तथा देहात के रहने वालों के जीवन में काफी अन्तर है। वहाँ पर कुछ स्थानों पर रूमानी सभ्यता के अनुसार चित्र तथा कला अवश्य की हुई है वरन् अधिकांश घर

संसार के औरों नगरों की भाँति ही हैं। भोजन करते समय रूमानी लोग अपना भोजन (जिसके वे आदी हैं) अवश्य खाते हैं। खाने का रिवाज हमारे यहाँ से कुछ भिन्न है घर के मर्द तथा स्त्रियाँ दफ्तरों, दुकानों तथा कारखानों में काम करने के लिये जाते हैं और उनके बच्चे स्कूलों तथा कालिजों में पढ़ने जाते हैं।



नदी तट पर फ्लैक्स (सन) धोने का एक दृश्य

रूमानिया के बच्चे

रूमानी बच्चों का जीवन इंगलैंड आदि देशों के बच्चों से भिन्न है वहां के लड़कों तथा लड़कियों का जीवन भी भिन्न प्रकार का है। जब बच्चा पैदा होता है तो उसके दोनों हाथ बगल में और दोनों पैर एक एक साथ मज़बूती से बांध दिये जाते हैं। बच्चा दो महीने का हो जाता है तो उसके हाथ खोल दिये जाते हैं और ७ महीने की अवस्था में पैर खोले जाते हैं। रूमानी माताओं का कथन है कि ऐसा करने से बच्चों के हाथ पैर सीधे रहते हैं और टेढ़े नहीं होते। डाक्टरों की सम्मति के अनुसार ऐसा करना ठीक नहीं है क्योंकि बच्चों को मज़बूत तथा स्वस्थ्य बनाने के लिये आवश्यक है कि वह अपने हाथ पैर फेंकते रहें।

रूमानी किसान बच्चे प्रैम (Pram) में टहलाने के लिये नहीं ले जाये जाते उन्हें उनकी माताएं एक आयातकार टोकरी में रख कर अपनी पीठ पर लाद लेती हैं और मीलों चली जाती हैं।

उन भागों में जहां अल्पसंख्यक (बेस्सारबिया, ट्रान्सलबानिया) लोग रहते हैं वहां बच्चे कई भाषाओं

को बोलते हुए सुनते हैं, क्योंकि वहाँ के पढ़े लिखे लोग फ्रान्सीसी तथा रूमानी दोनों भाषाओं का प्रयोग करते हैं। वहां पर तीन साल का बच्चा भी दो अथवा तीन प्रकार की भाषाएं प्रयोग करता हुआ मिलेगा। इसी कारण रूमानी लोग बहु भाषी होते हैं।

गाँवों के अन्दर ७ वर्ष के होने पर बच्चे पाठशालाओं में पढ़ने जाते हैं। ७ वर्ष के पहले बच्चे अपनी माताओं के हाथ दूसरे घरेलू कामों में बंटाने लगते हैं यही कारण है जिससे बहुत से लोग अपने बच्चों को स्कूल न भेज कर घर अथवा खेत का काम कराते हैं। ११ वर्ष की अवस्था में लड़कों को स्कूल छोड़ देने की आज्ञा दे दी जाती है यद्यपि उन्हें चौदह साल तक कुछ बातों को सिखाने के लिये कुछ समय के लिये स्कूल बुलाया जाता है। इस कारण से छोटेपन में रूमानिया के लड़कों को और देशों की भांति पढ़ने का कम अवसर प्राप्त होता है और वे पढ़ नहीं सकते।

बच्चे बहुधा पहाड़ियों पर भेड़ों की देखभाल करने के लिये भेज दिये जाते हैं। वे अपना समय काटने के लिये अपने साथ कुछ काम करने के लिये ले जाते हैं।

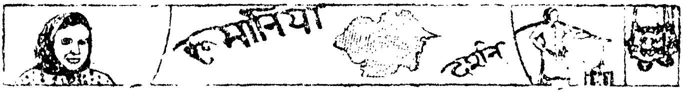
बहुधा छोटी लड़कियां वृक्षों के नीचे मोजे बुनते दिखाई पड़ती हैं। मोजा तयार होने पर यही लड़कियां उनके ऊपर फूलों तथा मालाओं की झालरें और बेलबूटे लगाती हैं। लड़कियाँ लेस तथा झालरें भी बनाया करतो हैं। लड़के लकड़ी का काम करते हैं और चम्मच तथा और दूसरे घरेलू सामान बनाते तथा उनपर सुन्दर चित्र कला करते हैं। वे बाजे तथा बांसुरियां भी बनाते हैं और गाने बजाने का अभ्यास करते हैं। प्रत्येक रूमानी अच्छा गवैया बनना चाहता है।

कभी कभी बच्चे सुन्दर बाग बनाने का खेल खेलते हैं वे छोटी छोटी टहनियां गाड़ कर बाड़ा बनाते हैं फिर उसपर कंकड़ डाल देते हैं उसके बाद टहनियों तथा फूलों की कतारें लगा देते हैं।

रूमानी लड़के खिलौने बहुत कम खेलते हैं वे स्कूल से घर लड़के भाग कर नहीं आते हैं वे जब वापस होते हैं तो बड़े बूढ़ों की भांति वापस आते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि बचपन ही से रूमानी लड़के अपने माता पिताओं की भांति कपड़े पहिनने लग जाते हैं और घर के कामों में हाथ बटाने लग जाते हैं

इसी कारण वे अपनी जिम्मेदारी महसूस करने लगते हैं और बालचर्या की ओर उनका ध्यान कम जाता है। जब नगर से कोई व्यक्ति उन्हें कोई खिलौना लाकर दे देता है तो भी वे उसे खेलना नहीं पसंद करते वरन् उसे खिड़की पर उठा कर रख देते हैं जिससे उसके सभी साथी लोग उसे देख सकें।

रूमानी लोग अपने बालकों को बहुत प्यार करते हैं, इसी कारण वहां के बच्चे बर्बाद हो जाते हैं। वे लोग बच्चों को बहुधा शाबाशी देते और प्यार करते हैं किन्तु सजा बहुत कम देते हैं। अगर कोई छोटा बच्चा बदमाश होता है तो उसके माता पिता उसे अपने पड़ोसी के हाथ बेचने का बहाना करता है। पड़ोसी अपने साथ ले जाते हैं उस समय बालक अपने को बेचा जान कर रोते हैं और रोते हुए मोल लेने वाले के साथ चले जाते हैं। कुछ ही मिनटों के पश्चात् उस बालक की माँ पड़ोसी के घर आती है और बालक को फिर से खरीद लेती है। वह बालक को नये नाम से खरीदती हैं जिसका अर्थ यह लगाया जाता है कि पुराने नाम का बदमाश लड़का तो बेचा जा चुका और उसके स्थान पर दूसरे नाम पर



अच्छा लड़का खरीदा गया है। उसके पश्चात् बालक अपनी मां के साथ घर आता है।

फेटे दिनों में रूमानी बच्चे बड़ी खुशी मनाते हैं। प्रत्येक फेटे दिन के रीत रिवाज अलग अलग होते हैं और उनमें बच्चे लोग अपना अपना काम करते हैं। ईस्टर के दिन रूमानी बच्चों के लिये बड़े खुशी के होते हैं।

ईस्टर के पहले गुडफ्राईडे के पहले वाला बृहस्पत ग्रेट थर्सडे (बड़ा बृहस्पत वार) के नाम से प्रसिद्ध है। उस दिन होली की तरह आग जलाई जाती है। इस अग्नि से यह समझा जाता है कि इसी अग्नि से पिटर ने अपने को गर्मी पहुंचाई थी। होली की भांति लकड़ी के एकत्रित करने में बालकों को बड़ा आनन्द आता है और वे इसका प्रयत्न करते हैं कि उनकी होलिका दहन सब से अच्छी हो।

सभी रूमानी लोग उस समय त्योहार को मनाने की तयारी करते हैं। मकान भीतर तथा बाहर दोनों ओर साफ किया जाता है और वह सफेदी से पोता जाता है। सभी लोग साफ कपड़ा पहनते हैं। यदि सम्भव

होता है तो सभी नया वस्त्र धारण करने का प्रयत्न करते हैं।

ईस्टर में अंडों पर प्रत्येक कुटुम्ब के प्राणी अपनी अपनी अलग अलग शकलें बनाते हैं। यदि किसान का घर हुआ तो पिता अंडे के ऊपर हल बनाएगा, लड़के मिलकी वे (आकाश गंगा) के तारागणों का चिन्ह बनावेंगे और माता तथा बड़ी लड़की स्पिंडिल (टेकुआ) बनावेगी। यदि कोई युवक गाँव की किसी लड़की का प्रेमपात्र होगा तो वह अंडे पर लम्बे केशों का आकार बनावेगा जिसपर लोग उसे चिढ़ावेंगे। इन चिन्हों का मतलब लगाया जाता है और प्रत्येक रंग का मतलब अलग अलग होता है। शकलों के बनाने में काले रंग का प्रयोग अधिक किया जाता है। काला रंग उस बात का चिन्ह स्वरुप है जो ईसामसीह ने अपनी सजा के समय भोगी थीं। खाने के पहले अंडे तोड़े जाते हैं। अंडे पड़ोसी के अंडों से लड़ाकर तोड़े जाते हैं। अंडे लड़ाते समय प्रत्येक व्यक्ति कहता है कि मसीह जी उठा है।

ईस्टर उन दिनों में से है जब कि रूमानी किसानों के घर में गेहूँ की रोटी बनाई जाती है। उनकी रोटी

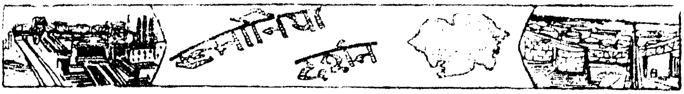
केक की भांति होती है। लड़के अपनी माताओं को ईस्टर की रोटियां बनाते समय देखते रहते हैं और बड़ी प्रसन्नता प्रकट करते हैं। ईस्टर की रोटियों के लिये बहुत अच्छा आटा चुना जाता है जिससे रोटियां मसीह के मुखड़े की भांति सफेद हों। आटे में अंडे मिला दिये जाते हैं और तब गूंधे हुए आटा को गुम्बद के आकार में किया जाता है (जिससे वह मसीह का मकबरा माना जाय) उसके ऊपर मसाला छिड़क दिया जाता है।

रोटी पर कुछ लौंगें भी गाड़ दी जाती है जो फांसी की कीलों की सूचना देती हैं। जब ईस्टर की रोटी तयार हो जाती है तो अंडों का छिलका नदियों में ले जाकर फेंक दिया जाता है। यह बड़ा प्राचीन रिवाज है और कोई भी व्यक्ति इसके बारे में अधिक नहीं जानता। किसान लोग कहते हैं कि यह छिलका ईस्टर की खुशी में रोकमन लोगों को नदी द्वारा भेजा जाता है जो बहुत दूर मूर्ति पुजारियों के बीच में रहते हैं। रोकमन लोगों की गणना अच्छे लोगों में की जाती है। शायद रोकमन रोमन लोगों का दूसरा नाम हो और यह रिवाज भी प्राचीन क्रिश्चियन चर्चों का हो।

रूमानी लोग ईस्टर सप्ताह को वीक-आफ लाइट

(प्रकाशमय सप्ताह) कहते हैं और ईस्टर के दिनों के निमंत्रण कई रोज तक जारी रहते हैं। प्रकाशमय सप्ताह होने से ईस्टर के दिनों की बत्तियां होती हैं। रूमानिया में ईस्टर का मंगलवार इंगलैंड के ईस्टर के सोमवार की भांति ही मनाया जाता है। वहां के लड़के तथा लड़कियों भारतवर्ष के नागपञ्चमी के त्योहार की भांति पेट भर कर झुलना झूलते हैं। यह लोग इसलिये झूलते हैं कि उसी दिन जूदा ने अपने को पेड़ के ऊपर से झुलाकर फाँसी लगा ली थी। इसलिये अधिकतर झुलना पेड़ों पर ही डाला जाता है।

ईस्टर के समय ही सेन्ट जार्ज दिवस रूमानिया में मनाया जाता है। सेन्ट जार्ज भेड़ों तथा बकरियों का संरक्षक माना जाता है। यह त्योहार २३ अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन का मौसिम रूमानिया में सब से अच्छा माना जाता है। सेंट जार्ज दिवस के दिन रूमानी लड़के, लड़किया तथा जवान भी जंगल को जाते हैं और टहनियाँ तोड़ कर ले आते हैं और उससे दर्वाजे खिड़कियाँ तथा गायों के बाँधने के स्थानों को सजाते हैं। सेन्ट जार्ज दिवस को रूमानी लड़के बड़े हाव भाव



के साथ मनाते हैं। कदाचित् यही दिन उनके लिये सब से अच्छा होता है। सवेरे वे लोग नेट्ल (बिछू का पेड़) एकत्रित करते है। उसके बाद वे एक दूसरे को ढूँढ़ते हैं कि कोई व्यक्ति खाली स्थान पर तो नहीं है। जो ऐसे स्थान पर होता है उसे लोग वेबकूफ समझते हैं।

जाड़े के दिनों का सबसे बड़ा त्योहार बड़े दिन का होता है। यह त्योहार लगभग १५ दिन मनाया जाता है। लड़के द्वार द्वार पर जाकर मंगलगान गाते हैं। मंगलगान प्रश्न तथा उत्तर के रूप में होते हैं। एक समूह प्रश्न करता है और दूसरा समूह उसका उत्तर देता है। बड़े दिन की संध्या को लड़के घर घर जाकर सोने वालों को जगाते हैं और लोग कुछ न कुछ फल इनाम में अवश्य ही देते हैं।

बड़े दिन के अवसर पर सुअर के मांस का समूसा बड़ा आनन्दप्रद भोजन माना जाता है। संध्या के समय भी एक खास प्रकार का भोजन दिया जाता है उसे टर्टे कहते हैं। इसमें पतले बिसकुट चीनी की चासनी अथवा शहद के साथ दिये जाते हैं। उस पर अखरोट की बुकनी भी मिला दी जाती है। टर्टडिश से ईशू के ऊपर लपटी हुई पट्टी का अर्थ लिया जाता है।

देश दर्शन

रूमानी लोग मई के महीने में अपना राष्ट्रीय त्यौहार मनाते हैं। राष्ट्रीय त्यौहार स्वतंत्रता दिवस के नाम से प्रसिद्ध है और १० मई को मनाया जाता है। इसी दिन रूमानिया ने तुर्की साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त की थी। यह त्योहार अधिकतर स्कूलों तथा कालेजों में मनाया जाता है। सभी स्कूल कालेज तथा युनिवर्सिटी के प्रधान लड़के तथा लड़कियाँ बुखारेस्ट लाए जाते हैं। वहाँ पर उनकी परीक्षा होती है और सफलता प्राप्त करने वालों को क्षात्र-वृति (वजीफा) तथा दूसरे पुरस्कार दिये जाते हैं। परीक्षा के पश्चात् छोटे बच्चों को भी खेल तमाशों में सम्मिलित कर लिया जाता है। और बुखारेस्ट नगर का दृश्य दिखलाया जाता है।

नगरों के बालकों का पालन पोषण भी देहात के बालकों की भांति ही होता है। जो लोग अधिक शिक्षित हैं वही पुराने रिवाजों को नहीं मानते और बच्चों के हाथ पैर नहीं बांधते। ३ वर्ष के बाद लड़के मोन्टेसोरी स्कूल भेजे जाते हैं। प्रत्येक नगर में मोन्टेसोरी स्कूल हैं जहाँ पर ३ साल से ७ वर्ष तक के बालक पढ़ाये जाते हैं। ११ वर्ष के बाद लड़के सेसेन्ड्री स्कूलों में भेजे

जाते हैं। जो लोग अपने बालकों को नहीं भेज सकते उन्हें दूकानों अथवा कारखानों में कुछ समय के लिये काम करने की आज्ञा दे दी जाती है। शेष समय वे स्कूल की पढ़ाई में व्यतीत करते हैं।

रूमानिया में व्वाय स्काउट (बालचर) आन्दोलन का जोर है। वहाँ पर कुछ लड़कियाँ भी गर्ल्स गाइड हैं। रूमानिया में खेल कूद का रिवाज अधिक नहीं है। वहाँ स्कूलों में हमारे यहाँ की भांति फुटबाल, हाकी, क्रिकेट आदि की टीमें बहुत कम हैं।

नगरों में ईस्टर और बड़े दिन का त्योहार देहात की ही तरह मनाया जाता है। त्योहारों में सिनेमा, थियेटर तथा नाच गान घर भरे रहते हैं। सेंट जार्ज दिवस नगरों में उतने उत्साह से नहीं मनाया जाता जितने उत्साह से वह गावों में मनाया जाता है।

नगरों के लड़के अपनी शिक्षा की पूर्ति करने के लिये फ्रांस जाते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

किसी समय में कार्पेथियन पर्वत के बनैले भागों में गड़रियों की एक जाति रहा करती थी। वह एक शक्तिशाली तथा मज़बूत जाति थी। उनका अपना राजा था। राजधानी सरमिसा गथूसा में थी जो ट्रान्सीलवानिया में एक सुन्दर स्थान है। यह नीति डैसियन जाति के नाम से प्रसिद्ध है। यह प्राचीन यूनानी जाति के लोग थे।

ब्यूरेविस्टा इस जाति का सबसे बड़ा राजा हुआ उसके सयय में डैसियन लोगों ने अपना एक शक्तिशाली राज्य बना लिया। किन्तु थोड़े समय के पश्चात् ही रोमन आक्रमण उन पर हुआ। पहले रोमन लोग इटली से बेकार हो जाने पर रूमानिया के घास के मैदानों में आए वे लोग लैटिन भाषा का प्रयोग करते थे। उनके आने के बाद रोमन सेनाओं ने धावा मारा। डैसियन लोगों ने बहादुरी के साथ रोमनों का सामना किया किन्तु हार गये। कहा जाता है कि जब राजा, सरीमिसा गेथुला में घेर लिया गया तो उसने अपने सभी सूर-माओं को बुला कर जहर खा लिया।

रोमन राजा ट्राजन ने रूमानिया बसाने का संकल्प



किया। इसलिये उसने रोमन नागरिकों को रूमानिया में रहने के लिये उत्साहित किया। रोमन सैनिक लोग भी वहीं अपनी शादी करके रहने लगे। वर्तमान रूमानी जाति इन्हीं लोगों के वंशज हैं।

डासिया १६० साल तक रोमनों के अधिकार में रहा। उन्होंने नई सड़कें बनवाई और दूसरे उन्नतिशील सुधार किये। लैटिन राज्य की भाषा बना दी गई।

जब रोमन लोग गोथ जाति से युद्ध कर रहे उस समय उन्हें मजबूर होकर डासिया छोड़ना पड़ा उनके चले जाने पर रूसी लोगों ने हमला कर दिया और देश के भीतर घुस आये। उन्होंने कई हमले किये थे।

छठवीं शताब्दी में स्लाव लोगों ने आक्रमण किया और यूगोस्लोविया बल्गेरिया आदि देशों में रहने लगे। स्लाव लोगों के सम्मेलन से रूमानी दृष्टिकोण तथा रूमानी भाषा में उनका काफी प्रभाव पड़ा है। स्लाव जाति के ३०० साल बाद मगयार लोगों का आक्रमण हुआ जो हंगरी में रहने लगे और उन्होंने रूमानिया के कुछ भाग पर अधिकार जमा लिया। ४०० साल बाद तेरहवीं शताब्दी में तातार लोगों ने आक्रमण

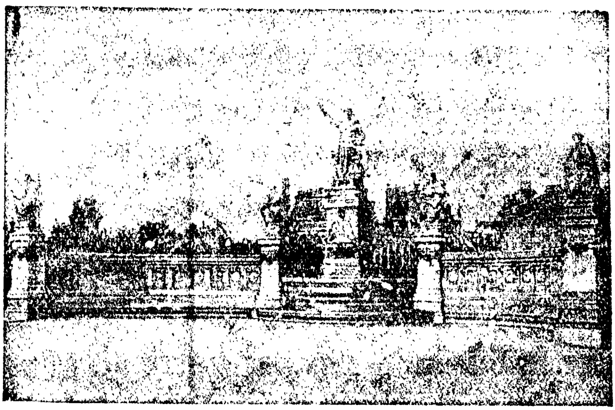
किया। तातारियों का सरदार बातू था चिंगेज खाँ का बंशज था। जिन देशों को तातार लोगों ने जीता वहाँ पर उन्नोंने अधिकार करके छोड़ दिया और उनसे कर लेने लगे।

मंगोल राजाओं के समय मंगोलियन साम्राज्य का रूमानिया एक भाग हो गया। उस समय मंगोलियन साम्राज्य चीन मे कार्पेथियन प्रदेश तक फैला हुआ था। सारे साम्राज्य में शान्ति स्थापित थी, सड़कें सुरक्षित थीं और किसी प्रकार का भय न था। साम्राज्य में सब कहीं एक ही सिक्का चलता था और सामान का अदला बदला सरलता पूर्वक हो जाता था।

तातार लोगों का राज्य अधिक दिनों तक नहीं चल सका जैसे जैसे उनकी शक्ति क्षीण होती गई वैसे वैसे व्यारियों की कठिनाइयां बढ़ती गईं और तुर्की राज्य की उन्नति होती गई।

तुर्क लोग हज़रत मुहम्मद के मानने वाले थे, जहां जहां उन्होंने अपना अधिकार जमाया, वे ईसाई मत बैरी हो गये रूमानिया ने बहुत समय से ईसाई धर्म मान लिया था। रोमन लोगों ने ईसाई धर्म प्रचलित किया

था। बैज़नटाइन साम्राज्य की स्थापना होने पर रूमानी लोगों का सम्बन्ध कुस्तुनतुनिया के पादरी के साथ हो गया था। यही कारण है जो कि अधिकांश रूमानी लोग ग्रीक आर्थोडाक्स (प्राचीन यूनानी) चर्च के मानने वाले हैं।



बुखारेस्ट का एक दृश्य

जब तुर्कों ने रूमानिया पर अधिकार जमाना आरम्भ किया तो उन्होंने उनके धर्म में किसी प्रकार की रोक नहीं डाली। जब रूमानिया पर तुर्की आक्रमण हुआ तो रूमानिया एक संगठित देश था। वह दो भागों में बँटा था। मोलडेविया तथा वल्लाचिया उसके दो प्रान्त थे।

वहां के राजे वोयवोडेस (Voevodes) तथा सरदार ब्वाएर्स (Boyars) कहलाते थे।

बाहरी आक्रमण होने के कारण राजों को देश के भीतर सुधार करने तथा शासन करने का समय नहीं मिलता था तो भी बेल-बूटों और गोटे पट्टे का काम अच्छा बनाया जाता था। उस समय मकानों की कारीगरी भी अच्छी की जाती थी और उसी काल के बने हुए सुन्दर चर्च तथा मठ अब भी मौजूद हैं।

जब कोलम्बस ने अमरीका का पता लगाया तो मोलडाविया में स्टेफेन राजा राज्य कर रहा था। उसे तुर्कों से लगभग ३६ लड़ाइयां लड़नी पड़ी जिससे ३४ में वह विजयी हुआ और दो युद्धों में उसे हार हुई। जब वह युद्ध में विजयी होता था तो एक नया चर्च बनवाता था। स्टेफन ग्रेट (बड़े) की बहादुरी तथा उदारता के बारे में बहुत सी कहानियां प्रसिद्ध हैं।

कहा जाता है कि एक बार जब स्टेफेन चर्च जा रहा था तो उसने बर्चेल नामक किसान को हल जोतते देखा। उस किसान के केवल एक ही हाथ था। राजा ने पूछा कि वह रविवार को भी काम क्यों कर रहा है।

इस पर किसान ने जवाब दिया कि तुर्कों से युद्ध करने में उसका एक हाथ नष्ट हो गया था। एक हाथ हो जाने से वह अधिक काम नहीं कर सकता था इसी कारण वह बहुत गरीब हो गया था और गरीबी के कारण ही उसे रविवार को भी काम करना पड़ता था। राजा उस पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने एक हल तथा ६ बैल उसे दिये और उसको अपना संतरी बना लिया। जहाँ पर बर्चेल खड़ा होकर संतरी का काम करता था, वह स्थान बर्चेल माउन्ट (भीटा) के नाम से प्रसिद्ध है।

नीगा से बेस्सारब नामक राजा बड़ा बुद्धिमान तथा पढ़ा लिखा था। उसने बहुत सी शानदार सुन्दर इमारतें बनवाई हैं। सब से अधिक प्रसिद्ध कर्टिया डी अर्गेश का मठ तथा चर्च है। इस स्थान पर रूमानी राजों की समाधियां बनाई जाती हैं। इसके बनवाने में बहुत रुपया लगा था। जब राजा के पास बिलकुल रुपया न रह गया तो उसने अपने सरदारों को बुलाया और कर लगाने की सलाह करने लगा। प्रजा के ऊपर पहले से ही कर बहुत था और बड़ी गरीब थी। जब रानी ने यह बात सुनी तो वह आई और उसने अपना हार उतार कर चर्च बनवाने के लिये दे दिया और प्रजा पर कर न

लगाने की प्रार्थना की। रानी का नाम डेस्पीना था। रानी का हार ले लिया गया और उसी से मठ तयार किया गया।

सोलहवीं शताब्दी के अंत में माइकेल दि ब्रेव (बहादुर) नामक राजा बल्लाचिया के सिंहासन पर बैठा। सन् १६०० ई० में वह भयानक युद्ध के पश्चात् बल्लाचिया तथा मोल्डाविया के सिंहासन पर बैठा। दोनों प्रान्त मिला दिये गये किन्तु यह सम्मेलन अधिक समय तक नहीं चल सका। उसकी मृत्यु के पश्चात् लगभग १०० साल तक रूमानिया की प्रजा अपने राजा तथा तुर्कों के अत्याचार से पीड़ित रही। उसके पश्चात् कान्स्टैनटाइन ब्रैन्कन वीनो नामक व्यक्ति बल्लाचिया की गद्दी पर बैठा। उसने २५ साल तक राज्य किया और बहुत सी इमारतें बनवाईं तथा विद्या और कलाकौशल की उन्नति के लिये बड़ा प्रयत्न किया किन्तु तुर्क लोग उसको द्वेष-भाव से देखते थे इसलिये उन्होंने उसे सिंहासन से उतारने का खड़यंत्र किया।

एक दिन सवेरे नौकर ने आकर राजा को खबर दी कि कुस्तुनतुनिया से तुर्की राजदूत आया है। उसी

बीच राजदूत कमरे के अन्दर पहुंचा और उसे एक काला रेशम का चौकोर टुकड़ा राजा के कंधों पर फेंकते हुए कहा कि तुम गद्दी से उतार दिये गये हो।

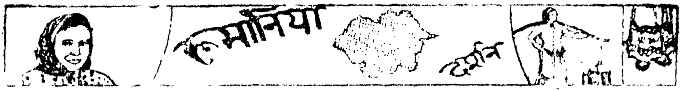
राजा, रानी, चार बच्चे तथा एक पोते के साथ कुस्तुन्तुनिया पहुँचाया गया वहाँ पर उन्हें तीन महीने तक कठिन कारागार में रखा गया और उससे उसके खजाने का भेद पूछा गया, किन्तु राजा ने भेद नहीं दिया आखिरकार उसे सकुटुम्ब ईसाई धर्म त्याग देने के लिये कहा गया उसने उसे भी इन्कार कर दिया। एक दिन अगस्त के गर्म दिनों में राजा सकुटुम्ब एक एक कमीजें पहने हुए फांसी देने वाले स्थान पर ले जाये गये। वहां पर फिर उनसे धर्म त्यागने के लिये कहा गया राजा ने उत्तर दिया कि हमारा सारा संसारिक धन लिया जा चुका है अब हमारे पास केवल हमारी आत्मा है, उसे हम रखेंगे और किसी को नहीं देंगे।

इस पर पहले बच्चों को मार डाला गया उसके बाद राजा को फांसी दी गई, केवल रानी तथा उसका पोता जीवित रखा गया। आज भी रूमानी जाति को अपने इस राजा पर बड़ा गर्व है।

राजा के मरने के बाद उसके उत्तराधिकारियों में

राज्य सिंहासन के लिये झगड़ा होने लगा। इसका लाभ तुर्क सम्राट् ने उठाया और जिसने उसे अधिक कर दिया उसे गद्दी पर बैठाया। जो राजे हुए उन्होंने सरदारों से कर लिया और सरदारों ने प्रजा पर कर बढ़ाया इस प्रकार प्रजा की दशा बहुत खराब हो गई और प्रजा तथा सरदारों में द्वेष भाव की उत्तेजना बहुत बढ़ गई।

चूंकि राज्य अधिक से अधिक कर देने वालों को तुर्की सम्राट् की ओर से दिया जाता था इसलिये अठारहवीं शताब्दी में राज्य सिंहासन यूनानी लोगों को दिया गया जो फैनरियोटीज (Phanariotes) कहलाते थे। यह लोग फैनर के रहने वाले थे जोकि कुस्तुनतुनिया का एक भाग था। तुर्क लोगों को विदेशी भाषा सीखने की आज्ञा न थी इसलिये यूनानी लोग विदेशी भाषा को समझने का कार्य करते थे। यूनानी राजाओं के राज्य में रूमानी प्रजा को बहुत कष्ट उठाने पड़े उनके कष्टों का वही जाति अनुमान कर सकती है जो विदेशी शासन में रही हो। किन्तु यूनानी लोगों के राज्य से एक बहुत बड़ा लाभ रूमानिया को हुआ। यूनानी लोगों ने



प्राचीन यूनानी भाषा तथा फ्रांसीसी भाषा का प्रचार रूमानिया में किया जिससे रूमानिया में विद्या का प्रचार हुआ।

विद्या का प्रचार प्रजा के बीच में नहीं वरन् प्रथम श्रेणी वालों के बीच में हुआ था। प्रजा तो विदेशी शासन के बोझ से पीड़ित थी ही इसलिये उनके बीच डाकू पैदा होगये जो धनी लोगों पर डाका मारने लगे। डाकू लोग हैडूक्स (Haidooks) के नाम से प्रसिद्ध हैं। काडरीनू नामक हैडक सब से अधिक प्रसिद्ध था। वह धनी सरदारों पर तो डाका डालता था किन्तु डाके के धन को वह पीड़ित प्रजा तथा गरीबों की सहायता बड़ी उदारता के साथ करता था, इसलिये प्रजा उसे बहुत प्यार करती थी।

क्रीमियन युद्ध के पश्चात् रूमानी प्रजा को फिर अपने प्राचीन दिन याद आए और उन्होंने जनवरी सन् १८५९ ई० में वलाचिया तथा मोल्डाविया को मिला कर अपना राज्य बनाया। अलिकज़ंडर कर्ज नामक सैनिक राजा चुना गया और उसे सिंहासन पर बैठाया गया। अलिकज़ंडर ने देश में शीघ्र सुधार आरम्भ कर दिये और स्कूल, कालेज तथा विश्वविद्यालय बनवाए।

उसने खानाबदोश लोगों को स्वतंत्र कर दिया। उच्च श्रेणी वालों ने उसके सुधारों का विरोध किया और विदेशी राजा बनाने का निश्चय किया। सात साल तक राज्य करने के पश्चात् अलिकज़ंडर ने राज्य सिंहासन छोड़ दिया और एक नौ जवान शाहज़ादा को हेनज़लरन-सिगमरिन्जन वंश का सिंहासन पर बैठाया गया। भाग्य-वश नया राजा बड़ा चतुर तथा बुद्धिमान था। उसने ५० साल तक राज्य किया और उसके शासन काल में रूमा-निया ने बड़ी उन्नति की। उसकी रानी का नाम एलि-ज़बेथ था वह एक बड़ी कवि थी। कैरोल के १५ साल के शासन के पश्चात् रूमानिया को पूर्ण स्वतंत्रता मिल गई और वह तुर्की साम्राज्य से अलग हो गया।

जब गत महायुद्ध आरम्भ हुआ कैरोल राजा जीवित था। कुछ महीनों के बाद उसकी मृत्यु होगई और उसका भतीजा फरडीनेन्ड राज्य सिंहासन पर बैठा। उसकी रानी मैरी इँगलिश राजकुमारी थी। वह अब की रूमा-निया की रानी है।

१९१६ ई० में रूमानिया ने मित्र राष्ट्रों का साथ देने के लिये निश्चय किया। युद्ध काल में रूमानिया को

बड़ी हानि उठानी पड़ी। जब १९१७ में रूस तथा जर्मनी के बीच संधि हुई तो रूमानिया को अपने देश का काफी भाग छोड़ना पड़ा था और युद्ध बन्द करना पड़ा था। १९१८ में मित्र राष्ट्रों को विजय प्राप्त हुई और रूमानिया के साथ एक नई संधि की गई जिसके अनुसार उसे बहुत सी भूमि प्राप्त हुई जो उसके अधिकार में है। वर्तमान रूमानिया प्राचीन राज्य के दुगुने से भी अधिक है।

१९२७ ई० में फरडीनेन्ड की मृत्यु हो गई। उस पर रुमानी प्रजा ने छोटे राजकुमार माइकेल को अपना राजा चुना। माईकेल जब गद्दी पर बैठा तो केवल ५ साल का था, वह अब भी बालक ही है। रूमानिया ने लीग आफ नेशन्स तथा पेरिस संधि दोनों पर अपने हस्ताक्षर कर दिये दिये हैं।

वर्तमान समय में फिर युद्ध हो रहा है। जर्मनी ने पोलेण्ड पर तथा रूस ने फिनलैण्ड पर अधिकार कर लिया है डेनमार्क भी जर्मनों के हाथ आ गया है। नार्वे में जर्मनी ने आक्रमण किया है और वहाँ पर जर्मन सेना तथा अँग्रेज़ सेना में युद्ध हो रहा है। रूमानिया तथा जर्मनी के बीच व्यापारिक संधि होगई है और रूमानिया ने अपना गेहूँ जर्मन को देने का निश्चय किया है।

रूमानिया की कहानियां

संसार के और देशों की भांति रूमानिया में भी परियों तथा उनके सूरमाओं की कहानियां प्रचलित हैं। उनमें से कुछ कहानियां नीचे दी जाती हैं।

राजकुमार तथा परियों की रानी की कहानी

किसी समय में एक राजकुमार था जो शिकार का बड़ा शौक़ीन था। एक दिन प्रातःकाल वह अपने साथियों के साथ जंगल की ओर शिकार के लिये गया। उसके साथी भिन्न भिन्न मार्गों द्वारा चले। स्वयम् राजकुमार ने बीच का मार्ग लिया। थोड़ी ही दूर चलने पर राजकुमार ने एक हिरण देखा जिसके गले में मोती का हार तथा पैरों में सुनहरे चूड़े पड़े हुए थे। हिरण इतना सुन्दर था कि उसे राजकुमार ने जीवित ही पकड़ लेना चाहा। राजकुमार ने उसका पीछा किया किन्तु पकड़ नहीं सका। वह अपने साथियों से मिल गया और सबों ने हिरण को चारों ओर से घेर लिया।

ऐसी स्थिति में हिरण एक सरोवर में कूद पड़ा। सरोवर के किनारे राजकुमार तथा उसके साथी दिनभर

हिरण की राह देखते बैठे रहे । लगभग आधी रात के समय थके मांदे होने के कारण वे सभी सो गये । सवेरे जब वे उठे तो सरोवर का कहीं पता भी न था और उसके स्थान पर एक सुन्दर विशाल महल खड़ा था जो सूर्य की भांति प्रकाशमय था ।

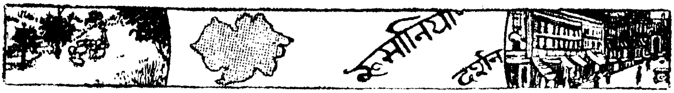
राजकुमार महल की ओर गया, द्वार खुले थे इसलिये वह भीतर घुसा और सीढ़ियों द्वारा ऊपर की ओर गया । वहां उसने एक सुन्दर सजाया हुआ कमरा देखा जिसमें हीरे जवाहिरात लगे हुये थे । उस कमरे में एक ओर एक सिंहासन था जिसपर १६ साल की एक सुन्दर युवती बैठी हुई थी । उसके चारों ओर लगभग एक दर्जन सुन्दर बालिकायें खड़ी थीं । राजकुमार विस्मित निगाहों से तमाशा देख रहा था । इस पर सिंहासन पर बैठी हुई युवती ने कहा—ऐ राजकुमार क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं वही हिरण हूँ जिसका तुम पीछा कर रहे थे । मैं परियों की रानी हूँ ।

राजकुमार तथा परियों की रानी का ब्याह हो गया, किन्तु ब्याह होते समय रानी ने राजकुमार से यह प्रतिज्ञा करा ली थी कि जो कुछ भी रानी करेगी उसे

राजकुमार बिना कुछ कहे ही स्वीकार कर लेगा। कुछ दिनों के पश्चात् उनके एक बालक पैदा हुआ। रानी ने परियों के देश से लैमिया को बुलाया और उसे एक ओर आँखों से ओट ले जाकर हत्या कर डालने की आज्ञा दी। राजकुमार यह नहीं सहन कर सका और कोमल शब्दों में बोल उठा। इतने पर परियों की रानी अलोप हो गई और फिर राजकुमार को उसके दर्शन नहीं हुये।

रूमानी लोग लगभग सभी चिड़ियों तथा जानवरों के बारे में कोइ न कोई कहानी कहते हैं। निम्नलिखित कहानी से पता चलता है कि कठफोड़वा की चोंच क्यों लम्बी की है और वह सदैव वृक्षों पर चोंच द्वारा आघात क्यों करता रहता है।

प्राचीन काल में कठफोड़वा पक्षी न था वरन् वह एक बूढ़ी लम्बी नाक वाली स्त्री थी। वह स्त्री प्रत्येक व्यक्ति के काम में सदैव छेड़ छाड़ किया करती थी। उसकी शरारतों के कारण पड़ोसियों में झगड़ा हो जाता था। एक दिन ईश्वर ने उसे चींटी, मटे, मक्खियाँ, गुबरौला और दूसरे कीड़े मकोड़ों से भरा हुआ बोरा दिया



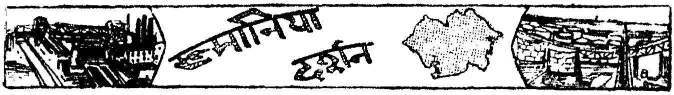
और उसे घर ले जाने को कहा। उसे ईश्वर ने बोरे को खोलने से मना कर दिया था और कहा था कि यदि वह बोरा खोलेगी तो उसे अनन्त काल तक कष्ट भोगने पड़ेंगे।

बृद्धा स्त्री ने बोरा उठाया और घर की ओर चल दिया किन्तु मार्ग को उसे चिन्ता हुई कि उसे बोरा खोलने के लिये क्यों मना किया गया है। उसने बोरा खोला ओर उसके भीतर की ओर देखने लगी। बोरे के मुंह का खुलना था कि सारे कीड़े मकोड़े बोरे से निकल कर चारों ओर फैल गये। उस स्त्री को यह देख बड़ा भय मालूम हुआ। उसने उन्हें पकड़ पकड़ कर बोरे में भरने का बड़ा प्रयत्न किया। इतने में उसने ईश्वर की आवाज़ सुनी कि जब तक वह सब कीड़ों को पकड़ कर बोरे में भर न देगी तब तक वह चिड़िया बनी रहेगी। कीड़े मकोड़े सारे जगत में फैलगये थे उनका भरना कठिन था। वह स्त्री उसी समय कठफोड़वा बन गई। इसी कारण सारे कठफोड़वे लकड़ी फोड़ते रहते हैं और कीड़े मकोड़ों को खाया करते हैं।

इसी प्रकार बुलबुल की कहानी है। जब ईश्वर ने संसार के जीवों का पैदा करना आरम्भ किया तो उसने

जानवरों तथा पक्षियों को भिन्न भिन्न रंगों में रंग दिया। बुलबुल को इस बात का पता नहीं लगा। जब उसने दूसरे पक्षियों तथा पशुओं को भिन्न प्रकार के रंगो में रँगा देखा तो वह भी ईश्वर के पास गया किन्तु जब वह पहुँचा तब रंगों का डिब्बा खाली हो चुका था। इसलिये ईश्वर ने रंग के स्थान पर बुलबुल को सुरीली वाणी होने का वर्दान दिया इसी कारण बुलबुल की आवाज़ सुरीली होती है।

रूमानी लोग अपने साधु तथा पैग़म्बरों के बारे में भी कहानियां कहा करते हैं। कहते हैं कि जब आदम और हव्वा, आदम वाटिका से निकाल दिये गये तो आदम ने भोजन सामग्री पैदा करने के लिये एक स्थान पर खोदना आरम्भ किय, इसपर शैतान आया और उसने कहा कि मेरी भूमि क्यों खोद रहे हो। आदम ने उत्तर दिया कि मुझे मालूम न था कि यह तुम्हारी भूमि है। इस पर शैतान ने कहा कि सारे संसार की भूमि मेरी है लेकिन मैं तुम्हें इस शर्त पर ज़मीन दे सकता हूँ कि तुम अपना और अपने बेटे की आत्मा मुझे दे दो।



आदम ने मज़बूर होकर ऐसा करने पर अपनी स्वीकृति दे दी। शैतान ने आदम के साथ समझौता किया और चूँकि आदम लिखना पढ़ना न जानते थे इसलिये एक गीली ईंट पर आदम ने अंगूठा निशान कर दिया और शैतान ने उसे आग में डाल कर पक्का बना लिया। शैतान ने उसे जार्डिन नदी में एक पत्थर के नीचे छिपा दिया।

जब ईसू को जार्डिन नदी में बप्तिस्मा दिया गया तो जान के नीचे पड़कर वह पत्थर चकनाचूर हो गया इस प्रकार संसार का सब से पहला समझौता नष्ट हो गया।

देश दर्शन

रूमानी लोगों के घरेलू कहानियां

किसी समय में एक बड़ा चतुर राजा था। जब राजा बूढ़ा होगया तो उसके एक पुत्र पैदा हुआ। राजा ने बालक का नाम एलियोडोर रखा। एलियोडोर के बालपन ही में उसके पिता का देहान्त हो गया। मरने के पहले राजा ने अपने पुत्र को कहा कि अमुक पर्वत पर कभी न जाना क्योंकि उसपर एक राक्षस रहता है जो लँगड़े घोड़े पर सवारी करता है जो कोई भी उस पर्वत पर जाता है उसे बड़े कष्ट झेलने पड़ते हैं।

एलियोडोर अपने पिता की भांति ही चतुर, सुशील तथा अच्छा राजा था किन्तु उसे बहादुरी के कार्य करने में बड़ा आनन्द आता था। वह अपने पिता के कथनानुसार कभी भी उस पर्वत पर नहीं जाता था।

एक दिन वह राज्य सम्बन्धी चिन्ता में टहल रहा था टहलते टहलते उसी ओर पर्वत की भूमि में जा पहुँचा। शीघ्र ही राक्षस उसके समीप आकर खड़ा हो गया और उसने राजा से कहा कि तुम जानते हो कि जो कोई मेरे भूमि में आता है वह मेरा हो जाता है।

एलियोडोर ने उसे समझाने का प्रयत्न किया कि वह न तो उसके भूमि में आना ही चाहता था और न उसे किसी प्रकार का कष्ट ही देना चाहता है किन्तु राक्षस ने कुछ भी नहीं सुना और कहा कि वह उसे तभी छोड़ सकता है जब वह ग्रीन इम्पर (हरे राजा) की पुत्री लाने का वचन दे।

राजा ने दूसरा मार्ग बचने का न देख प्रतिज्ञा कर लिया और प्रतिज्ञाबद्ध होकर उसी की खोज में रवाना हुआ। चलते चलते वह एक सरोवर के तीर पहुँचा। राजा भूखा था उसने पाइक मछली को तट पर देख कर उसे पकड़ लिया किन्तु मछली ने कहा मुझे मारो नहीं मैं तुम्हे यह अपना चमड़ा देती हूँ जब कभी तुम इसे देख मेरी याद करोगे मैं आकर तुम्हारी सहायता करूँगी। राजा ने चमड़ा ले उसे छोड़ दिया।

राजा आगे बढ़ा और उसे एक पँख का टूटा हुआ एक कौआ मिला। राजा उसे मार कर खाने की बात सोच ही रहा था कि कौवे ने कहा मुझे मारिये नहीं वरन मेरा पंख बांध दीजिये और यह पंख अपने साथ रखिये। जब आपको कष्ट हो तो आप इस पंख को

देखियेगा और मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा। राजा ने कौवे के कहने के अनुसार ही किया और आगे बढ़ा।

थोड़ी दूर चलने पर उसे एक चींटी मिली। राजा उसको पैरों से कुचलने वाला ही था कि चींटी ने चिल्ला कर प्रार्थना की। महाराज मेरे प्राण न लीजिये, मैं आपका प्राण बचाऊँगी। यह मेरा छोटा पंख लेते जाइये जब आप इसे देखेंगे तो मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूँगी। राजा दयालु तो था ही उसने उसे भी छोड़ दिया।

चलते चलते बहुत दिनों के पश्चात् वह हरे राजा के महल के सामने पहुँच गया। राजा ने द्वार पर खड़े होकर दो दिन तथा दो रात तक बराबर खटखटाया किन्तु कोई उत्तर न मिला। तीसरे दिन हरे राजा ने अपने नौकरों को बुला कर डाँट बताई और द्वार खोलने के लिये कहा।

एलियोडोर हरे राजा के सामने ले जाया गया और उसने राजा की पुत्री को अपनाने का मत प्रकट किया। राजा ने उत्तर दिया कि जाओ और अपने को जहां

चाहे तीन बार छिपाओ। राजकुमारी तुम्हें ढूँढ़ेगी यदि वह पा जावेगी तो तुम मार डाले जाओगे। और यदि वह तीनों बार तुम्हें न पावेगी तो तुम्हें अधिकार होगा कि तुम राजकुमारी से ब्याह कर लो।

एलियोडोर ने पहले मछली को बुलाया मछली ने राजा को सीपदार मछली बनाकर सीपों के बीच समुद्र की तह में ले जाकर रख दिया।

राजकुमारी ने अपने जादू वाले चश्मे लगाकर ढूँढ़ना आरम्भ किया और आखीरकार उसे सीपों के बीच से निकाल बाहर किया। राजकुमारी को एलियोडोर की चतुरता देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने अपने पिता से कहा कि चाहे मैं इसे तीनों मर्तबा ढूँढ़ निकालूँ तो भी इसी के साथ ब्याह करूँगी।

दूसरे दिन एलियोडोर ने कौवे को बुलाया कौवे ने उसे कौवा बनाकर उसे कौवों के समूह में ले जाकर बैठा दिया। राजकुमारी ने चारों ओर उसे पता लगाया किन्तु पता न चला तो उसने आकाश की ओर देखा और कौवों के झुंड मे उसे नीचे उतारा।

तीसरे दिन एलियोडोर ने चींटी को बुलाया। चींटी

ने उसे फूल का बीज बना दिया और उसे राजकुमारी के लहँगे में छिपा दिया। राजकुमारी ने चारों ओर ऊपर नीचे तमाम तलाश कर डाला किन्तु न पाया। तब राजकुमारी ने कहा तुम अपने को प्रकट करो। यद्यपि तुम मेरे समीप हो तो भी मैं तुम्हें नहीं पा रही हूँ। तुम ने मुझे जीत लिया है और मैं अब तुम्हारी हो चुकी।

प्रतिज्ञा के अनुसार राजकुमारी एलियोडोर की हो गई और वह उसे लेकर चला। राजकुमारी एलियोडोर पर मोहित हो गई थी। मार्ग में एलियोडोर ने राजकुमारी से बतलाया कि वह उसे एक राक्षस के लिये ले जा रहा था।

जब वे राक्षस के समीप पहुँचा तो राक्षस ने राजकुमारी से बड़ा प्रेम प्रकट किया किन्तु राजकुमारी ने उससे शादी करने से इंकार कर दिया। इस पर राक्षस इतना क्रोधित हुआ कि मारे क्रोध के उसका शरीर फट गया। एलियोडोर ने राजकुमारी के साथ ब्याह कर लिया और राक्षस की भूमि भी अपने राज्य में मिलाकर रहने लगा।

एक बार एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया। वहाँ उसने एक बहुत बड़ी झील देखी जिसके बीच में एक जंगली हंस खड़ा था। राजा ने उसे गोली से मारना चाहा इस पर हंस ने प्राणदान मांगे। इस पर राजा ने उसे जीवित पकड़ लिया और घर ले आकर अपनी भोजन बनाने वाली को दे दिया कि उसे मारकर भोजन तयार करे। जब रसोई बनाने वाली ने उसे मारना चाहा तो हंस ने तीन बार गुलांचें लगाईं और एक सुन्दर युवती बन गई।

नौकरानी शीघ्र ही राजा के पास पहुँची और सारा हाल कह सुनाया। राजा को बड़ा विस्मय हुआ और वह स्वयम् रसोई घर में पहुँचा और उसने युवती से पूछा कि तुम कौन हो। युवती ने उत्तर दिया कि मैं हँस थी और मेरी माँ तथा दो बहनें परियों के देश में हैं। राजा युवती पर मोहित हो गया और उसने उसके साथ ब्याह कर लिया।

रसोई बनाने वाली स्त्री राजा से प्रेम करती थी, वह बड़ी बदमाश स्त्री थी। कुछ दिनों के पश्चात् राजा के एक लड़का पैदा हुआ। नौकरानी रानी से ऊपरी बड़ा

प्रेम रखती थी इसलिये एक दिन वह उसे बाग़ में फूलों को दिखाने के लिये ले गई। बाग़ के बीच में एक कुआं था। नौकरानी ने रानी से कुएँ में मुँह देखने के लिये कहा और जैसे ही रानी कुएँ की ओर देखने लगी उसने रानी को कुएं में ढकेल दिया।

जब राजा लौटकर घर आया तो नौकरानी ने कहा कि रानी ने अपने घर की याद की थी इसलिये वह हंस बनकर उड़ गई है।

कई महीने बीत गये किन्तु रानी का पता न लगा तो राजा ने नौकरानी के साथ ब्याह करने का निश्चय किया। नौकरानी राजकुमार बालक को बहुत प्यार करती थी। इसी बीच कुंएँ के अन्दर एक बेंत का पेड़ उग आया और उसमें तीन टहनियाँ निकल आई थीं जो कुँएं के ऊपर थीं। राज बाटिका के समीप ही एक गड़रिया रहता था। एक दिन गड़रिये ने अपने लड़के को भेड़ों को चराने के लिये भेजा वह राजबाटिका में होकर गया और उसने कुएँ के बेत की एक टहनी काट कर उसकी बांसुरी बनाई। जैसे ही उसने उसे बजाया उसमें से आवाज़ निकली "ऐ बालक मुझे जोरों से मत

बजाओ मेरा दिल मेरे छोटे बच्चे के लिये बहुत दुखी है"। वह बालक लौट कर घर गया, उसके पिता ने बांसुरी उससे लेकर उसे फिर भेड़ चराने के लिये भेज दिया। गड़रिये ने भी बांसुरी बजाया तो उसे भी वही आवाज़ सुनाई पड़ी इसलिये उसने उस बांसुरी को छिपा कर रख दिया।

राजा की शादी का दिन समीप आया और समस्त देश के गाने बजाने वाले एकत्रित हुये। गड़रिया अपनी अद्भुत बांसुरी लेकर पहुँचा। सभी लोगों ने गाया बजाया किन्तु जब गड़रिये ने बांसुरी बजाई तो आवाज़ निकली "ओह आदमी बहुत तेजी से मत बजाओ क्योंकि मैं अपने बालक के लिये दुखी हूँ जिसे मैंने नौकरानी (जिप्सी) के पास पालन पोषण करने के लिये छोड़ दिया है"।

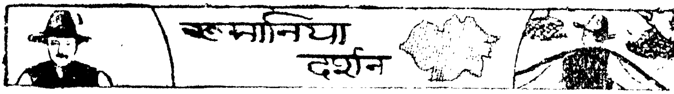
नौकरानी ने शीघ्र ही गाने का आशय समझ लिया किन्तु उसकी समझ में यह बात न आई कि बाँसुरी का रानी से कैसे सम्बन्ध हो सकता है। राजा ने स्वयम् बांसुरी लेकर बजाई तो आवाज निकली "ओह मेरे प्यारे पति मुझे ज़ोर से न बजाइये क्योंकि मेरा दिल बालक

के लिये दुखी है जिसे मैं पलने पर नौकरानी के भरोसे छोड़ आई हूँ।"

राजा ने नौकरानी को बजाने पर मजबूर किया जब नौकरानी ने बजाया तो उसमें से आवाज निकली "मेरी दुश्मन मुझे जोरों से मत बजाना क्योंकि मेरा दिल उस बच्चे के लिये दुखी है जिसे मैंने तुम्हारे जिम्मे पलने पर छोड़ दिया है। तुम बड़ी बदमाश हो, तुमने मुझे कुँए में गिरा दिया है और मेरे जीवन का अंत कर दिया था किन्तु ईश्वर ने मुझे जीवित रखा जिससे कि मैं अपने पति की पतिव्रता स्त्री बनू।"

नौकरानी ने बांसुरी को इतने ज़ोर से फूका कि उसके टुकड़े टुकड़े हो जाँय किन्तु वह बाँसुरी वही रानी बन गई। उसने सारी कहानी राजा से कह सुनाई। राजा ने नौकरानी को मरवा डाला और गड़रिये के बालक को बहुत इनाम दिया।

उसके कुछ दिन बाद राजा की आज्ञा से रानी ने फिर हंस का रूप धारण किया और परियों के देश में अपनी माँ को देखने गई, वहाँ से वापस आकर फिर स्त्री का रूप धारण करके सुखपूर्वक रहने लगी।



रूमानी जाति के कुछ महान नेता गण

सन् १८२१ ई० में आइवन ब्रैटिआन् तथा वासीलियो अलिक्जंड्री का जन्म हुआ था। उस समय रूमानिया दो भागों में बँटा था। ब्रैटियान् वल्लाचिया का रहने वाला तथा वासीलियो अलिक्ज़ंड्री मोल्डाविया का निवासी था। ब्रैटियान् का जन्म पिटेस्टी नगर में और वासीलियो का जन्म जेस्सी नगर में हुआ था। इन दोनों महान् आत्माओं ने रूमानिया को स्वतंत्र बनाने तथा सँगठित करने में बहुत बड़ा हाथ बटाया है।

ब्रैटियान् ने १७ साल की अवस्था में वल्लाचियन सेना में अपना नाम लिखाया किन्तु उसने विद्या सीखना अधिक उपयुक्त समझा इसलिये सेना से छुट्टी लेकर वह पेरिस पहुँचा क्योंकि उस समय रूमानिया में विश्वविद्यालय न थे और जो कोई उच्चशिक्षा प्राप्त करना चाहता था उसे विदेश में जाकर ही विद्या सीखनी पड़ती थी। जब वह अपनी शिक्षा समाप्त करके अपने देश लौटा तो उसने देखा कि उसके देश में काफ़ी लोग थे जो रूमानिया को विदेशी साम्राज्य के पंजे से छुड़ाना चाहते थे। ब्रैटियान् उनका नेता बन गया।

सन् १८४८ ई० में जब क्रान्ति हुई तो तुर्की साम्राज्य के विरुद्ध आन्दोलन हुआ उसमें उसने प्रमुख भाग लिया किन्तु शीघ्र ही आन्दोलन कुचल दिया गया और ब्रैटियान् को देश निकाले की सजा दी गई। वह पेरिस चला गया और वहां पर उसने अपने देश की स्वतंत्रता के बारे में फ्रान्सीसी भाषा में कुछ लेख लिखे। उसके बाद वह अपने देश में वापस आया। वापस आने पर वह पकड़ा गया और उसे ३ महीने का कारागार तथा बहुत ज्यादा जुर्माना हुआ। कारागार में उसे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा उसके बाद पागल खाने में भेजा गया किन्तु उसी समय वह अपने भाई डिमीट्री के साथ घर वापस आया। उस समय दोनों भाइयों में बड़ी घनिष्ठता थी दोनों देश के प्रेमी थी और उसकी स्वतंत्रता के लिये लड़ रहे थे।

१८५९ ई० में वल्लाचिया तथा मोल्डाविया के राज्य मिला दिये गये और राजकुमार कूजा राजा बनाया गया। आइवन ब्रैटियान् को कूज़ा ने अपना एक मंत्री बनाया। ब्रैटियान् जानता था कि कूजा अच्छा आदमी नहीं है इसलिये उसने उसके निकालने में हाथ

बटाया। यह उसी के परिश्रम का नतीजा है कि राजकुमार चार्ल्स होहेनजलरन, कूज़ा के स्थान पर रूमानिया का राजा बनाया गया।

सन १८७७ ई० में रूमानिया ने तुर्की साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध घोषणा की और एक ही युद्ध में सफलता प्राप्त करने के बाद रूमानिया स्वतंत्र हो गया। इस युद्ध में ब्रेटियानों ने प्रमुख भाग लिया था। वह १२ वर्ष तक रूमानिया का प्रधान मंत्री रहा। उसका सबसे बड़ा विरोधी तथा सबसे बड़ा मित्र उसका भाई सी० ए० रोसीटो था। राजनीति से अलग होने पर उसे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा किन्तु अधिक समय तक वह जीवित नहीं रह सका और सन् १८६० ई० में उसका स्वर्गवास हो गया।

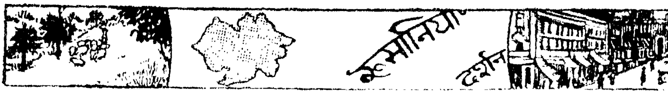
वसोलियो अलिक्ज़ंड्री बड़ा होने पर एक अच्छा कवि हुआ। ब्रेटियान् की भांति वह भी शिक्षा प्राप्त करने के लिये पेरिस भेजा गया। जब वह जेस्सी में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् लौटा तो देश प्रेम ने उसके हृदय में भी वेदना पैदा करदी और वह भी विदेशी शासन से अपने देश को स्वतंत्र बनाने में लग गया।

कवि होने के कारण उसका ध्यान रूमानिया के प्राचीन गीतों की ओर गया इसलिये १८ साल की

अवस्था में वह कार्पेथियन प्रदेश का भ्रमण करने के लिये निकला और लोगों से गाने सुन सुन कर उन्हें लिखता गया। इस प्रकार प्राचीन गानों को इकट्ठा करके उसने उन्हें एक पुस्तक रूप में छपा दिया।

सन् १८४८ ई० की क्रान्ति में भी उसने भाग लिया। उसे भी विदेशी सरकार से अपनी प्राण-रक्षा के लिये पेरिस भागना पड़ा। पेरिस से वह लंदन गया और वहां उसने अपनी कविताओं का एक संग्रह रूमानी भाषा में निकाला। उसने रूमानी स्वतंत्रता के लिये वहां पर बहुत से लेख लिखे जो समाचार पत्रों में प्रकाशित किये गये। फ्रान्सीसी खेलों का अनुवाद उसने रूमानी भाषा में किया और उन्हें रूमानी थियेटरों में खेल कराने के लिये भेजा।

जब कूज़ा रूमानिया का राजा हुआ तो वह वैदेशिक मंत्री बनाया गया किन्तु उसने केवल एक साल तक इस स्थान पर काम किया। उसके बाद अपना सारा जीवन उसने कविताओं तथा खेलों के लिखने में व्यतीत किया। उसने वेनिस नगर पर भी एक कविता लिखी है। अलिक्जंड्री की मृत्यु ब्रेटियान् से कुछ महीने पहले ही हो गई थी।



जब अलिकज़ंड्री ने रूमानी गीतों का संग्रह किया था, उसके कुछ समय बाद एमेनिस्कू नामक एक दूसरे कवि ने कविता करनी आरम्भ की। उसके माता पिता बड़े गरीब थे। इसलिये उसका बाल जीवन बड़ा संकटमय था। वह बड़ा कोमल हृदय का था। देश की बुरी दशा होने के कारण वह दुखी था। इसलिये उसकी कविताएँ निराश तथा दुखान्त हैं किन्तु तो भी वे बड़ी सुन्दर हैं और उनका प्रभाव उसके देश वासियों पर बहुत अच्छा पड़ा है। आज वह रूमानिया का सबसे बड़ा कवि माना जाता है। १८८९ ई० में कीट्स की भांति वह भी युवा अवस्था में ही इस संसार से चल बसा। उसका अंतिम जीवन बड़ा संकटमय था क्योंकि मृत्यु के कुछ समय बाद वह पागल हो गया था।

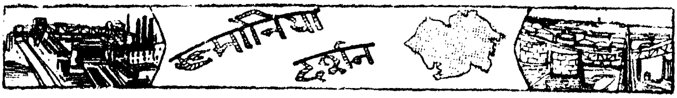
विदेशी सरकार के होने के कारण रूमानिया में प्राचीन रूमानी भाषा का संग्रह नहीं है। केवल सत्रहवीं शताब्दी के कुछ लेख थे जिनको उन्नीसवीं शताब्दी के रूमानी लेखक माइकेल—कागलिनसियानो ने फिर से ठीक करके उन्हें छपा दिया जिससे उसके देशवासी उसे पढ़ तथा समझ सकें।

माइकेल कागलिनसियानो एक बड़ा लेखक, ऐति-

हासिक राजनीतिज्ञ तथा एक बड़ा भाषण देनेवाला था। उसने बहुत से राजनैतिक सुधार कराए। उसने सत्रहवीं शताब्दी की भाषा का नया रूप बनाकर जब रूमानी समाज के सामने रखा तो उसने उसे बहुत पसंद किया। इस प्रकार रूमानी इतिहास का अवलोकन बढ़ गया।

प्रोफेसर आयेगोरा बुखारेस्ट की यूनिवर्सिटी में इतिहास के प्रोफेसर हैं और एक साप्ताहिक पत्र के सम्पादक भी हैं। उन्होंने रूमानी इतिहास की छान बीन दूसरे देशों में जाकर की है और नई नई बातों का पता लगाया है। वह आटोमन साम्राज्य तथा बैज़नटाइन इतिहास के एक बड़े ज्ञानी तथा अधिकारी हैं।

रूमानिया का सबसे बड़ा खेल तथा नाटक लेखक आई० एल० कारजियाले हैं। उनके अधिकांश नाटक सुःखान्त हैं। लास्टलिटेर (खोया हुआ पत्र) तथा स्टारमी नाइट (तूफानी रात) नामक नाटक सब से अधिक प्रसिद्ध हैं। कारजियाले ने अपने नाटकों को लिखकर अपनी जीविका नहीं कमाई। सच्ची बात तो यह है कि पहले उनका पूछने वाला भी कोई न था। जब वह नाटक लिख रहा था तो पहले उसने बर्लिन में



कुछ व्यापार किया उसके बाद उसने रूमानिया में पंच की भांति एक हासप्रद पत्रिका का सम्पादन किया।

राजकुमारी बिबेस्को ने अपने देश का सुन्दर वर्णन लिखा है। वह वर्तमान लेखक है। वह राजकुमार बिबेस्को की नातेदार है। राजकुमार बिबेस्को की शादी प्रधान इँगलैंड के प्रधान मंत्री लार्ड आक्सफोर्ड के पुत्री से हुई थी। रूमानिया की स्त्रियाँ समाजिक तथा अन्तर-राष्ट्रीय कामों में प्रधान भाग ले रही हैं। रूमानिया ही इँगलैंड के सिवा दूसरा देश है जहाँ की एक स्त्री लीग-आफ नैशन्स की सभा में प्रतिनिधि है। मैडम वकारेस्को एक प्रसिद्ध लेखक तथ भाषण देने वाली है। जब से राष्ट्रीयसंघ की स्थापना हुई है तब से आज तक उसने सभा की प्रत्येक बैठक में भाग लिया है। कैन्टाकुज़ेने नामक रूमानी स्त्री ने १९२९ ई० में स्त्रियों की इन्टर-नैशनल काउन्सिल का सभापतित्व किया था। रूमानिया की महारानी की सुपुत्री राजकुमारी इलीना लड़कियों के लिये वीमेन्स क्रिश्चियन संस्था द्वारा बड़ा उपकार कर रही हैं। यह कार्य वे रूमानिया में ही नहीं वरन् दूसरे देशों में भी कर रही हैं।

रूमानिया के निवासी, जाति तथा भाषा

रूमानिया के बहुत से निवासी ऐसे हैं जो रूमानी जाति के नहीं हैं। रूमानिया की जन संख्या एक करोड़ अस्सी लाख है जिसमें अल्पसंख्यक लोगों की संख्या लगभग ७० लाख है। इनमें से लगभग ८० हज़ार यहूदी हैं। हंगेरियन लोगों की संख्या ६० लाख है। इसके सिवा जर्मन तथा रूसी लोग हैं जो रूमानिया के अधिकार में हैं।

हंगेरियन लोग अधिकांश मात्रा में ट्रान्सिलवानिया के निवासी हैं। रूमानिया में यही अल्पसंख्यक लोगों में प्रधान हैं। सच्चे हंगेरियन अथवा मगायर लोग सूरत-शकल में रूमानी लोगों से नहीं मिलते। यह लोग हुन जाति के वंशज हैं जो मध्य एशिया के निवासी थे। हुन लोग तातार अथवा मंगोलियन जाति से हैं। हुन जाति का प्रथम बड़ा नेता अट्टीला था जिसने रोमन काल में बड़ा उपद्रव किया। ८८६ ई० में उन्होंने कार्पेथियन पर्वत पार किया और हंग्री में आ बसे। उनमें से कुछ ट्रान्सिलवानिया में आ बसे थे। उन्होंने दूसरी जातियों के

साथ मिल जुल गये हैं इसलिये उनका एशियाई रूप नहीं रह गया है। उनमें बहुतों के उनके पूर्वजों की भांति चौड़े गाल तथा वर्गाकार होंठ हैं। उनमें से कुछ छोटे



रूमानिया की तेल बेचने वाली एक स्त्री

क़द के हैं किन्तु बड़े फुर्तीले हैं। उनकी भाषा रूमानी लोगों से बिलकुल भिन्न है। रूमानी भाषा फ्रान्सीसी तथा इटैलियन भाषा से मिलती जुलती है जो मुख्यतः लैटिन

भाषा से निकली है। मगयार भाषा फिनिश तथा तुर्की भाषा से मिलती जुलती है।

हंगेरियन लोग अपनी प्रकृति के अनुसार सनातनी हैं और अपने प्राचीन रीत-रिवाजों को मानते हैं



मैदान के गड़रिये

तथा उन्हीं के अनुसार काम करते हैं। वे लोग बड़े शान्त तथा हँसमुख होते हैं किन्तु यदि वे नाराज़ हो जाते हैं तो एकाएक उनकी नाराज़गी की सीमा नहीं रह जाती है। हंगेरियन लोग अपने देश के बड़े प्रेमी होते हैं। उनके

देश-प्रेमी होने के कारण ही ट्रान्सिलवानिया का सुधार होना कठिन हो रहा है। वे लोग अपने जीवन को किसी भाँति भी बदलने के लिये तैयार नहीं हैं। इस कारण वहां के सुधारकों को बड़ी कठिनाई हो रही है। वहाँ के कुछ निवासियों ने यह तय कर लिया



रूमानिया के नट भालू का नाच दिखा कर अपनी रोज़ी कमाते हैं

है कि वे हंगरी के परतंत्र होकर रुमानिया में विदेशी की भाँति अपना जीवन व्यतीत करेंगे। कुछ लोग रूमानी प्रजा बनने के लिये भी राज़ी हो गये हैं। इस प्रकार सभी लोगों को प्रसन्न रखना बहुत कठिन हो रहा है और इसी कारण रूमानिया तथा हंगरी के बीच बहुत खटपट

तथा अनबन की बातें पैदा हो गई हैं। इन दोनों देशों के झगड़ों को मिटाने के लिये राष्ट्र संघ की सहायता ली गई है और अब उनके आपसी सम्बन्ध अच्छे हो रहे हैं।

रूमानी लोगों तथा हंगेरियन लोगों के धर्म में भी



रूमानिया का एक किसान जिप्सी (नट) की बाँसुरी देख रहा है। अपनी बतख़ देकर उसने यह बाँसुरी मोल ली है।

अन्तर है। रूमानी लोग ग्रीक आर्थोडाक्स (प्राचीन यूनानी) चर्च तथा यूनियेट चर्च के मानने वाले हैं। यूनियेट चर्च वालों की क्रिश्चियन सर्विस तो पुराने रीत पर ही होती है किन्तु वे रोम के बड़े पादरी को मानते हैं। दूसरी

ओर अधिकांश हंगेरियन रोमन-कैथलिक धर्म को मानते हैं और शेष प्रोटेस्टेन्ट धर्म को मानते हैं। इस प्रकार हंगेरियन तथा रूमानी लोग जहाँ कहीं भी एक साथ रहते हैं उनके लिये अलग अलग चर्च की आवश्यकता पड़ती है। भाषा एक न होने के कारण अलग अलग पाठशालों की उन्हें आवश्यकता होती है। बूढ़े हंगेरियन किसान रूमानी लोगों से अधिक पढ़े लिखे हैं क्योंकि वे पहले धनी आस्ट्रो-जर्मन साम्राज्य की प्रजा थे। बाद को भी अधिकांश हंगेरियन शिक्षकों की अधिकता होने के कारण हंगेरियन भाषा में ही शिक्षा दी जाती थी। इसलिये अधिकांश रूमानी लोग स्कूल जाते ही नहीं थे। सारे ट्रान्सिलवानिया प्रान्त में यह दोनों जातियां साथ साथ रहती हैं किन्तु कभी भी वे एक दूसरे को ठीक ठीक समझ नहीं पातीं। उनके भीतर आपस में काफ़ी मन-मोटाव रहता है जिसके कारण उनका जीवन सुखी नहीं रहता।

ट्रान्सिलवानिया तथा पश्चिम की ओर बनेट में जर्मन (सैक्सन) लोगों की काफी संख्या है। रिफार्मेशन काल के पहले उनके पूर्वज अपर राइन से भीतर की ओर ट्रान्सिलवानिया में आ बसे थे। उन्होंने बहुत सी

बस्तियां बसाईं जिसके कारण बहुत से नगर बन गये। उनमें ब्रासोव सब से अधिक प्रसिद्ध है।

यह लोग व्यापारी अथवा खान खोदने वाले बन गये। उसके बाद अठारहवीं शताब्दी में मैरियाथेरीसा के समय कुछ आस्ट्रियन लोग ट्रान्सिलवानिया, बनेट और हंग्री से आ बसे। तुर्की आक्रमणों तथा युद्धों के कारण ये भाग लगभग उजड़ चुके थे। नये आस्ट्रियन लोग जो आकर बसे थे वे अधिकांश संख्या में किसान थे। वे लोग स्वाबियन कहलाते थे।

यद्यपि सैक्सन लोग ट्रान्सिलवानिया तथा बनेट में सैकड़ों वर्षों से रह रहे हैं तो भी उन्होंने अपनी जर्मन आदतों को नहीं छोड़ा है। सैक्सन तथा स्वाबियन लोग हंगेरियन तथा स्वाबियन दोनों जाति से भिन्न हैं। वे लोग साफ गोरे चमड़े के हैं। वे बड़े चतुर व्यापारी हैं। स्वच्छता वे बहुत पसंद करते है और मितव्ययिता उनकी प्रकृति के अन्दर मौजूद है। उनमें अधिकांश लोग प्रोटेस्टेन्ट धर्म के मानने वाले हैं और बहुधा नगरों में अपनी बस्तियां बनाकर रहते हैं। जर्मन लोग जो

गाँवों में रहते हैं अधिकतर फल पैदा करने का काम करते हैं।

बेस्सारविया में अल्पसंख्यकों में सब से अधिक संख्या यूक्रेनियन लोगों की है। प्राचीन समय में बेस्सारविया मोल्डाविया का एक भाग था किन्तु गत महायुद्ध के १०० साल पहले से वह रूस के अधिकार में था। प्राचीन निवासियों में से डेसियन लोग भी हैं। यूक्रेनियन के सिवा बेस्सारविया में दूसरे रूसी लोग, जर्मन, तुर्क और दूसरे देशों के लोग भी रहते हैं। वहां पर यहूदी लोग भी काफी संख्या में रहते हैं।

यूक्रेनियन (छोटे रूसी) लोग यूक्रेन (जो रूसी घास के बड़े मैदान का एक भाग है) के निवासी हैं। यूक्रेन, बेस्सारविया की सीमा पर है।

यूक्रेनियन लोग (जो प्राचीन असली रूसी जाति के हैं) स्वतंत्र प्रकृति के हैं। वे लोग मँझोले क़द के और बड़े दुबले पतले होते हैं। वे बड़े ग़रीब होते हैं किन्तु बड़े परिश्रमी हैं। वे अंध विश्वासी तथा दुखी प्रकृति के होते हैं। जब रूस की क्रान्ति हुई और हर एक प्रान्त से अपना राज्य स्थापित करने के लिये कहा

गया तो यूक्रेन ने अपनी अलग सरकार स्थापित कर ली थी। यद्यपि अब भी वह सोवियट रूस का केवल एक भाग है। बेस्सारेबिया जो उस समय रूस का एक भाग था उसने भी अपनी अलग सरकार स्थापित की थी किन्तु बाद को वह रूमानिया में सम्मिलित हो गया।

रूमानिया में लगभग ८० हज़ार तुर्क तथा तारतार और २५ हज़ार बलगेरियन तथा सर्बियन लोग हैं। और दूसरे अल्प संख्यक लोगों की संख्या मिला कर लगभग ६० हज़ार है। इनमें अधिकांश खानाबदोश (इधर उधर डेरा खेमा लेकर घूमने वाली जाति) लोग हैं। यह लोग गाँवों में नाचने का काम किया करते हैं।

१७—यूगास्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलंड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़्वेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फरात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज़, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर (ग्रांड केनाल)।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का ४०) रु०।